भण्डारण भारती

अंक–60

केन्द्रीय भण्डारण निगम

सूरज का गोला

सूरज का गोला
इसके पहले ही कि निकलता
चुपके से बोला, हमसे–तुमसे,
इससे–उससे
कितनी चीजों से
चिड़ियों से पत्तों से
फूलो–फल से, बीजों से
"मेरे साथ–साथ सब निकलो
घने अंधेरे से
कब जागोगे, अगर न जागे,
मेरे टेरे से?"
आगे बढ़कर आसमान ने
अपना पट खोला
इसके पहले ही कि निकलता
सूरज का गोला
फिर तो जाने कितनी बातें हुईं
कौन गिन सके इतनी बातें हुईं
पंछी चहके कलियां चटकी
डाले–डाल चमगादड़ लटके
गांव–गली में शोर मच गया
जंगले–जंगल मोर नच गया
जितनी फैली खुशियां
उससे किरनें ज्यादा फैलीं
ज्यादा रंग घोला
और उभर कर ऊपर आया
सूरज का गोला
सबने उसकी आगवानी में
अपना पर खोला।

–भवानीप्रसाद मिश्र

जनवरी–मार्च, 2016

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
जे. एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
अनिल कुमार शर्मा
महाप्रबन्धक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप-संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
शशि बाला, विजयपाल सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, हौज खास, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: **विबा प्रेस प्रा. लि.**, सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका अंक-60

	विषय	पृष्ठ संख्या
➲	प्रबंध निदेशक की कलम से	03
➲	स्वागतम्	04
➲	संपादकीय	05
आलेख		
✪	आर्थिक विकास में कृषि का योगदान – ओमप्रकाश जोशी	06
✪	एक शब्द 'अच्छा सा' – रोहित उपाध्याय	09
✪	सर्वप्रिय राजभाषा हिन्दी – सुभाष चन्द्र	33
✪	सामाजिक संरक्षण और कृषि – रेखा दुबे	32
कविताएं		
●	होली आयी रे – प्रताप नारायन गर्ग	08
●	जग-जीवन – पी. सी. भट्ट	13
●	सच्चाई – दिनेश कुमार	13
●	मैं तेरे पास हूं ना – बलवान सिंह	15
●	गणतंत्र दिवस... ऐसा राष्ट्रीय पर्व है – एस. के. दुबे	18
●	बचपन का जीवन – सच्चिदानंद राय	26
साहित्यिकी		
❖	गुदड़ी के लाल	14
कहानी		
◎	मेरी रेल यात्रा – ए.के. भारद्वाज	11
विविध		
○	जिंदगी... कैसी है पहेली – महिमानन्द भट्ट	16
○	आकांक्षा और महत्वाकांक्षा – मीनाक्षी गंभीर	19
○	महाराणा प्रताप: वीरता के प्रतीक– नम्रता बजाज	24
○	आँगन का पंछी : कौआ – डॉ॰ मीना राजपूत	27
○	ईश्वर का न्याय या..... – रजनी सूद	31
अन्य गतिविधियां		
❍	सचित्र गतिविधियां	34
❍	पाठकों के पत्र	40

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी०एल०, परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से...

निगम के 60वें स्थापना दिवस की झलक भंडारण भारती के नवीनतम अंक में सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। हमें प्रसन्नता है कि इस वर्ष भी निगमित कार्यालय तथा सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में निगम का स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस दिन हमने निगम के लिए अब तक किए गए कार्यों को याद किया और निगम के लिए समर्पित भाव से कार्य करने का संकल्प लिया।

मार्च, 2016 के अनुसार निगम देश भर में लगभग 108.22 लाख मी. टन की कुल भंडारण क्षमता के साथ अपने 448 वेअरहाउस चला रहा है। निगम ने खाद्यान्नों के भंडारण के बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए भी अनेक कदम उठाए हैं। इसके लिए स्टील तथा ई–कॉमर्स कंपनियों के साथ टाई–अप करने के अतिरिक्त कंप्यूटरीकरण एवं अनेक मार्केटिंग प्रयास भी किए जा रहे हैं।

निगम उद्योग, व्यापार, कृषि एवं अन्य क्षेत्रों की भंडारण एवं लॉजिस्टिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ–साथ सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए भी निरंतर प्रयासरत है। इसके अतिरिक्त, निगम नराकास (उपक्रम), दिल्ली की विविध गतिविधियों में भी भाग लेता है तथा इस वर्ष नराकास के तत्वावधान में नगर स्तरीय हिन्दी प्रतियोगिता का सफल आयोजन करने पर निगम को आयोजक सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

राजभाषा हिंदी की प्रगति का जायजा लेने के उद्देश्य से संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 06.02.2016 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल का राजभाषा निरीक्षण किया गया। माननीय समिति ने क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यों की समीक्षा करते हुए संतोष व्यक्त किया। निगम सरकारी अपेक्षाओं के अनुसार शिक्षण एवं प्रशिक्षण के माध्यम से निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास कर रहा है। मेरा निगम के अपने सभी साथियों से आग्रह है कि वे भंडारण संबंधी गतिविधियों सहित राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को गति देने में अपना प्रयास जारी रखें ताकि अपेक्षित लक्ष्यों को पूरा किया जा सके।

निगम अपनी व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने सहित विभिन्न सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए भी जागरूक है जिसके तहत निगम ने महावीर इंटरनेशनल दिल्ली (एक स्वैच्छिक धर्मार्थ, गैर–धार्मिक समाज सेवा संगठन) के सहयोग से दिल्ली, लोनी, गाजियाबाद एवं गुड़गांव में चार चिकित्सा स्वास्थ्य एवं नेत्र जाँच के कैंप भी आयोजित किए।

किसी भी संगठन में गृह पत्रिका उस संगठन की गतिविधियों का आईना होती है और इसलिए पत्रिका प्रकाशन का कार्य आज अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। मैं निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि इस पत्रिका के माध्यम से आप सभी को जो मंच मिला है, उसमें अपने अनुभवों के आधार पर लेख लिखकर अपना योगदान दें ताकि निगम में नए भर्ती हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी वरिष्ठ अधिकारियों के अनुभवों का लाभ मिल सके। मुझे विश्वास है कि आप सभी इस दिशा में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करेंगे ताकि भविष्य में निगम बेहतर परिणाम प्राप्त करने में सफल हो सके।

शुभकामनाओं सहित!

¼gjihr flag½
प्रबंध निदेशक

स्वागतम्

केन्द्रीय भंडारण निगम, निदेशक (एमसीपी) के पद पर दिनांक 17.02.2016 को कार्यभार ग्रहण करने पर श्रीनिवास मुडगेरीकर जी का हार्दिक अभिनन्दन करता है। आपने मास्टर ऑफ इंजीनियरिंग की है तथा 1990 बैच के इण्डियन रेलवे ट्रैफिक सर्विस के अधिकारी हैं। निगम में कार्यग्रहण करने से पूर्व आपने विभिन्न पदों अर्थात रेल मंत्रालय से प्रतिनियुक्ति पर सीजीएम/ कन्टेनर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, सैन्ट्रल रेलवे में चीफ पब्लिक रिलेशन ऑफिसर तथा मुम्बई डिवीज़न में सीनियर डिवीज़नल कमर्शियल मैनेजर के पद पर कार्य किया। आपने अपने सेवाकाल के दौरान आईआईएम, बेंगलुरू/ सैराक्यूज़ यूनिवर्सिटी, यूएसए आईएनएसईएडी, सिंगापुर एवं केएलआईएफ, मलेशिया से एडवांस मैनेजमैंट का प्रशिक्षण प्राप्त करने सहित एंटवर्प पोर्ट में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

यह हर्ष का विषय है कि निगम को रेल मंत्रालय तथा कॉनकोर जैसे विभाग में कार्य कर चुके श्री मुडगेरीकर के गहन अनुभव का पूरा लाभ मिलेगा और यह आशा तथा पूर्ण विश्वास है कि उनके मार्गदर्शन में निगम व्यापारिक गतिविधियों की दिशा में विविधता लाने के लिए निरंतर आगे बढ़ता रहेगा।

केन्द्रीय भंडारण निगम परिवार निदेशक (एमसीपी) के पद पर कार्यभार संभालने के लिए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता है।

संपादकीय

निगम का राजभाषा अनुभाग कार्यान्वयन संबंधी विभिन्न कार्यों के साथ–साथ राजभाषा हिन्दी और मौलिक लेखन के प्रति अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ''भंडारण भारती'' पत्रिका का निरंतर प्रकाशन भी हमारी एक उपलब्धि है जिसमें सभी सुधी पाठकों का अमूल्य योगदान है।

राजभाषा अनुभाग पत्रिका के हर अंक में कुछ न कुछ नयापन लाने का निरंतर प्रयास करता रहता है। इस अंक में भी हमने साज–सज्जा सहित 'पाठकों के पत्र' शीर्षक को शामिल किया है। अपने स्थाई स्तंभों की शृंखला में इस बार कृषि, सामाजिक संरक्षण, ज़िंदगी, राजभाषा जैसे विषयों सहित कहानी एवं विभिन्न विषयों पर कविताएं भी प्रकाशित की गई हैं।

यह सच्चाई है कि किसी भी कार्य के लिए सदैव सुधार की गुंजाइश होती है और यह तभी संभव है जब हमें अपने पाठकों से पत्रिका के बारे में उनके सुझाव मिलें। हम आशा करते हैं कि पूर्व की भांति आगे भी हमें इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

¼ueerk ctkt½
प्रबंधक (राजभाषा)

आर्थिक विकास में कृषि का योगदान

* ओमप्रकाश जोशी

हमारे देश में आज भी दो तिहाई जनसंख्या गांव में निवास करती है जो पूर्णतः या आंशिक रूप से कृषि के ऊपर निर्भर है, इस कारण भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि प्रधान देश होने के बावजूद भी कृषि लाभकारी व्यवसाय नहीं है। किसानों को समय पर उन्नत बीज, उर्वरक और पर्याप्त बिजली नहीं मिलती। किसानों को अपना उत्पाद बेचने के लिए दलालों पर निर्भर होना पड़ता है जिससे लाभ का बड़ा हिस्सा इन दलालों के पास चला जाता है और अच्छी फसल के बावजूद भी वो लाभ से वंचित हो जाते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए गांवों को सीधे तौर पर स्थानीय/विश्व बाजार से जोड़ा जा सकता है जिसमें सूचना प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल कारगर साबित होगा। वर्तमान समय के वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, आर्थिक उदारीकरण की इस नवीनतम अवधि में भी भारत का मुख्य व्यवसाय कृषि है जो हमारी आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। आज़ादी के बाद दिन–प्रतिदिन जनसंख्या बढ़ती जा रही है और किसानों के खेत तथा जोत क्षेत्रों का आकार घटता जा रहा है। छोटे खेतों व जोत क्षेत्रों में कृषि के आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल कारगर ढंग से नहीं हो पाता जिसका पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार की विषम परिस्थितियों में निर्धन किसान रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करने को मजबूर हुए लेकिन उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ।

कृषि विकास के लिए प्रभावकारी साधनों में वृद्धि, उत्पादन बढ़ाने, किसानों को साहूकारों के जाल से मुक्त करने तथा किसानों को सस्ती ब्याज दर पर ऋण दिलाने के लिए सहकारी संस्थाओं का विकास किया गया। इस तरह देश में ग्रामीण स्तर पर प्राथमिक सहकारी समितियां, जिला–स्तर पर जिला सहकारी बैंक और राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंक कार्य कर रहे हैं। दीर्घकालीन ऋण प्रदान करने के लिए तहसील व जिला स्तर पर प्राथमिक भूमि विकास बैंक की स्थापना की गई है। सहकारी साख प्राथमिक कृषि साख समिति की कार्य पद्धति, समस्त सहकारी साख की उन्नति एवं समृद्धि का सूचक है। सहकारी संस्थाएं आज भी दीर्घकालीन साख के लिए राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक पर निर्भर है। आज किसान खेती व कृषि कार्यों से बमुश्किल अपनी आजीविका कमा रहे हैं, इस प्रकार की चुनौतियों का कोई सीधा सरल जवाब नहीं है। वास्तव में छोटे जोत क्षेत्रों की उत्पादकता में सुधार का एक अकेला कदम ही देश से भूख और गरीबी मिटाने में सक्षम होगा।

भारत की एक अरब से अधिक जनसंख्या में लगभग 70 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। किसानों को कृषि आधारित शिक्षा देने के लिए आधुनिक कृषि प्रणाली एवं उन्नत तरीके खोजने होंगे जिससे कृषकों की आय में वृद्धि हो सके। यह भी सही है कि उत्पादन के नए–नए कीर्तिमान स्थापित करने के बावजूद भी देश में बेरोजगारी एवं भुखमरी बढ़ी है। यह देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती है कि आज गांव के बेरोजगार को काम की तलाश में महानगरों की ओर पलायन कर दर–दर की ठोकरें खा रहा है। ऐसी दशा में यह आवश्यक हो जाता है कि जो भी ग्रामीण बेरोजगार है, उनको कृषि आधारित स्व रोजगार की ओर मोड़ा जा सके, जिससे ग्रामीण प्रतिभा का शहरों की ओर पलायन रुक सकेगा। ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि कृषि आधारित एवं उससे जुड़े रोजगारों

*वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

को बढ़ावा दिया जाए। कृषि से जुड़े रोजगार निम्नलिखित हैं :–

Qy ,oa lfCt;ksa lacaèkh jkstxkj

विविध प्रकार के फलों एवं सब्जियों की खेती करने के मामले में भारत किसी देश से प्रतियोगिता करने में सक्षम है। अन्य पोषक पदार्थों की तरह फलों एवं सब्जियों का दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। आजकल प्रचलित सब्जियों के अलावा कई नई तरह की सब्जियां आ रही हैं जिनका मूल्य अन्य सब्जियों की तुलना में ज्यादा है। इनमें ब्रोकली, चाइनीज़ पत्ता, गोभी, बटन गोभी, लाल पत्ता गोभी, विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च, संकर टमाटर प्रमुख हैं। इनकी मांग घरेलू बाजारों में ही नहीं बल्कि विदेशी बाजारों में भी बहुत है। भारतीय उपभोक्ता प्रसंस्कृत फलों की तुलना में ताजे फल अधिक पसंद करते हैं। फिर भी यह सत्य है कि फलों एवं सब्जियों का बहुत–सा हिस्सा प्रसंस्करण, संरक्षण एवं उचित भंडारण के अभाव में नष्ट हो जाता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि फलों एवं सब्जियों का सही संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रसंस्करण करके उसे देशी एवं विदेशी बाजारों में बेचकर ग्रामीण बेरोजगार घर बैठे रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। विश्व बाज़ार में फलों की मांग अधिक है जिससे देश के लिए जरूरी विदेशी मुद्रा ही नहीं कमाई जा सकती है बल्कि रोजगार के अवसर भी पैदा किए जा सकते हैं। जिन ताजे फलों के निर्यात की अधिक संभावनाएं मानी जाती हैं, उनमें आम, अंगूर, केला, लीची और विजातीय फलों में अनार, सपोटा आदि शामिल हैं।

cht mRiknu lacaèkh jkstxkj

भरपूर पैदावार लेने के लिए वर्तमान में मौजूद तकनीक और भविष्य में विकसित होने वाली तकनीकों का इस्तेमाल करते हुए बीजों की अनुवांशिकी एवं भौतिक शुद्धता बहुत जरूरी है। आज आधुनिक कृषि के लिए उन्नत किस्म के बीज सर्वाधिक उपयोगी हैं और उत्पादन बढ़ाने में इनकी महत्पूर्ण भूमिका है। केन्द्र सरकार ने कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए बीजों के महत्व को महसूस करते हुए 1963 में राष्ट्रीय बीज निगम और 1969 में भारतीय राज्य फार्म निगम की स्थापना की। इसका उद्देश्य विभिन्न फसलों के प्रमाणित बीजों के उत्पादन एवं वितरण में सुधार करना था। किसान उन्नत बीज की जगह केवल अपने घर पर उपलब्ध बीज की ही बुआई कर रहा है। इस परिस्थिति में यदि गांव के पढ़े–लिखे बेरोजगार अपना संगठन बनाकर जमीन को लीज़ पर लेकर सामूहिक बीज बनाने का कार्य करें तो आधुनिक एवं अधिक उपज वाली किस्मों के उन्नत बीज किसानों को प्राप्त हो सकते हैं। बीज उत्पादन का क्षेत्र और संभावनाएं काफी व्यापक हैं। इसके साथ ही ग्रामीण बेरोजगारों को घर पर आकर्षक रोजगार एवं आय प्राप्त करने का साधन बन सकता है।

nXèk mRiknu lacaèkh jkstxkj

पशुपालन का ग्रामीण आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण स्थान है। देश में दुग्ध उत्पादन में विकास की व्यापक संभावनाएं हैं। बेरोजगार युवक डेयरी क्षेत्र में आगे आकर तरक्की कर सकते हैं। बशर्ते वे परंपरागत तरीकों के स्थान पर बेहतर व उन्नत ढंग से डेयरी की व्यवस्था करें, तो इसमें लाभ ही लाभ है। इससे अच्छी आय प्राप्त हो, इसके लिए गांव में सहकारी समूह बनाकर उसमें उत्पादन से लेकर वितरण तक का कार्य उसी सहकारी समूह द्वारा किया जाए, जिससे बिचौलियों को जाने वाला लाभ रोका जा सकता है। इस संबंध में विपणन में होने वाले आवागमन व्यय तथा कार्यकर्ताओं के वेतन पर जो भी खर्च होता है, उसे सहकारी समूह वहन करता है। इसी तरह दूध के विभिन्न उत्पाद बनाकर बेरोजगारों को अच्छा लाभ मिल सकता है।

ckxokuh lacaèkh jkstxkj

भारत में अनेक प्रकार की मिट्टी और मौसम पाया जाता है, जिसके कारण यहां अनेक प्रकार के फलों एवं सब्जियों के अलावा फूलों की खेती वर्तमान में एक अच्छा रोजगार माना जा रहा है। बागवानी से जुड़े व्यवसाय में

गुलाब, सेवंती, गेंदा, रजनीगंधा, बेला, मोगरा, ग्ले डियोलाई इत्यादि विभिन्न प्रकार के देशी एवं विदेशी मौसमी पौधों तथा सजावटी कैक्टस, क्रोटन और बोनसाई वाले पौधों का व्यावसायिक उत्पादन काफी लाभदायक होगा। इस संबंध में अच्छी सरकारी संस्थाएं आई.आई.एच.आर. बेंगलूरू, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली से अच्छी किस्मों की बागवानी हेतु बीज अथवा पौधे प्राप्त कर नर्सरी बनाने का व्यवसाय निःसंदेह ग्रामीण बेरोजगारों के लिए वरदान साबित हो सकता है।

—f"k midj.k lcèkh jktxkj

मशीनी खेती से श्रम और समय की बचत होती है, इसलिए दीर्घकालीन कृषि विकास के लिए यदि व्यवसायिक दृष्टिकोण से जुताई के तरीकों, सिंचाई पद्धति व फसल कटाई और गहाई की मशीनों को ऊर्जा कुशल बनाने के लिए अनुसंधान की जरूरत है। इस बदलते दौर में खेतों की जुताई, कटाई एवं गहाई आदि के लिए आज आधुनिक मशीन देश के सभी किसानों के पास उपलब्ध नहीं है। यदि कृषि यंत्रों को बनाने के लिए ग्रामीण बेरोजगारों को प्रशिक्षित कर, कृषि उपकरण जैसे डिस्क हैरो, कल्टी वेटर, रोटा वेटर, प्लाऊ जुताई के लिए तथा फसल कटाई हेतु छोटे हार्वेस्टर, रीपर एवं बुवाई के लिए सीड कम फर्टी ड्रिल, फरो–रिज–बैड, प्लाटर, तिफन आदि को बनाकर रोजगार से जोड़ा जा सकता है। इससे कृषकों को सभी प्रकार के कृषि यंत्र गांव में उपलब्ध हो सकेंगे और बेरोजगारों को रोजगार भी मिल सकेगा, इससे आर्थिक विकास के साथ–साथ बेरोजगारी की समस्या से निपटने में मदद मिलेगी।

tfod —f"k l tMs jktxkj

जैविक कृषि की अवधारणा, प्रादुर्भाव और विकास के संबंध में पता चलता है कि भारत के किसानों के लिए जैविक कृषि की अवधारणा कोई नई नहीं है। वास्तव में जैविक कृषि वही है जो हमारी मिट्टी और जलवायु के अनुसार हो और हमारे पास उपलब्ध संसाधनों द्वारा हो। वनस्पतियों के अवशिष्ट पदार्थों को सड़ाकर तैयार किए गए खाद को कंपोस्ट खाद या हरी खाद कहा जाता है, कृत्रित पर्यावरण में केंचुओं का पालन–पोषण वर्मीकल्चर कहलाता है। केंचुओं द्वारा निर्मित खाद किसी अन्य खाद से अधिक लाभदायक होती है। कुछ जीव जैसे–मधुमक्खी, केंचुआ, मेंढक, कीट भक्षी चिड़िया आदि का खेत में आना यह संकेत है कि जैविक कृषि का कार्य ठीक प्रकार से चल रहा है। कृषि केवल मनुष्य और फसल के बीच का रिश्ता नहीं है वरन् प्रकृति में पाए जाने वाले प्रत्येक जीव का इसमें सहयोग और उत्पादन में हिस्सा भी होता है।

भूमंडलीकरण की अर्थव्यवस्था के वर्तमान दौर में कृषि आधारित उद्योग धंधों को अपनाकर कृषि व्यवसाय एवं रोजगार को बढ़ाया जा सकता है। कृषि को प्रतिस्पर्धात्मक और रोजगारमूलक बनाने के लिए अधिक सार्वजनिक और निजी निवेश भी जरूरी है। इससे कृषि प्रयोग के नए–नए तरीकों का ज्ञान, सही दिशा एवं स्पष्ट मार्गदर्शन किसानों को मिलने लगेगा, साथ ही किसानों को सही खाद एवं उर्वरक, बीज, पौध आदि उपलब्ध होंगे। 11वीं तथा 12वीं पंचवर्षीय योजना में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत कर करके ग्रामीण रोजगार व कृषि विकास की इन महत्वकांक्षी योजनाओं व कार्यक्रमों से अपेक्षित परिणाम प्राप्त होने की संभावनाएं बढ़ सकती है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नीति निर्माता, कृषि समुदाय संगठन, स्वयंसेवी संगठन और कृषि वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है। कृषि प्रगति के बिना समग्र विकास की संकल्पना कारगर नहीं हो सकती।

होली आई रे

*** प्रताप नरायन गर्ग**

होली आई रे होली आई,
होली आई है देखो आई,
हर घर में हलचल लाई,
छोटे बड़े लोगों को, हां सब लोगों को,
होली की बधाई।
होली आई रे .....

रंग गुलाल लगाती,
हाँ रंग अबीर उड़ाती,
फागुन में होली आई,
फूलों ने ली अंगड़ाई
होली आई रे होली आई
होली आई रे ....

हर गिले शिकवों को मिटाती,
सब दिलों को एक कराती,
इस मौके पे, हां इस मौके पे,
खाओ गुजिया, और पीओ ठंडाई,
होली आई रे, होली आई,
होली आई रे ....

* पूर्व सहायक महाप्रबंधक (वित्त), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

एक शब्द 'अच्छा' सा

* रोहित उपाध्याय

शब्द संपदा के मामले में हिंदी अत्यंत धनी भाषा है। अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिए हम कई शब्दों का सहारा ले सकते हैं, लेकिन हिन्दी भाषा में कई शब्द ऐसे हैं जिनका प्रयोग अनेक तरीकों से किया जा सकता है। हिन्दी भाषी आम बोलचाल की भाषा में इन शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से करते हैं। ऐसा ही एक अच्छा–सा शब्द है– 'अच्छा'। आमतौर पर 'अच्छा' को एक विशेषण के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, जिसका अर्थ भला, बढ़िया, सुन्दर, ठीक, सकुशल ही निकलता है। अमूमन 'अच्छा प्रयोग 'बुरा' का प्रयोग 'बुरा' या 'खराब' के विपरीत शब्द के तौर पर ही किया जाता है। जहां अहिंदी भाषी लोग अच्छा को केवल अंग्रेजी के गुड के अर्थ में ही देखते हैं, वहीं हिन्दी और उर्दू भाषा–भाषी लोग इस शब्द का दिनभर में जाने–अनजाने न जाने कितनी बार प्रयोग करते हैं।

'अच्छा' का गुड वाला अर्थ बचपन से हमारे दिमाग में इसी रूप में घर कर लेता है। माता–पिता, रिश्तेदार, पास–पड़ोसी, अध्यापक सभी बचपन से ही 'अच्छा बच्चा' बनने की शिक्षा देने लगते हैं। और भी न जाने क्या–क्या बाते हैं जो अच्छे बच्चे नहीं करते। और, इस तरह आपकी धीरे–धीरे एक अच्छे बच्चे से एक अच्छे पुत्र–पुत्री, अच्छे विद्यार्थी, अच्छे अधिकारी–कर्मचारी, अच्छे पति–पत्नी, अच्छे दादा–दादी इत्यादि बनने की यात्रा शुरू हो जाती है। यहां तक कि सरकार भी चाहती है कि आप एक 'अच्छे नागरिक' बनें और देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें।

हम भारतवासी डॉ. अल्लामा इक़बाल के लिखे गए गीत 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' को गाने में गर्व महसूस करते हैं। प्रख्यात शायर मिर्जा ग़ालिब भी कह गए हैं कि ''दिल बहलाने के लिए गालिब ख़याल अच्छा है।''

हम सब कुछ अच्छा–ही–अच्छा चाहते हैं। हमारे पास जो होता है, वह हमें अच्छा नहीं लगता और जो दूसरे के पास होता है, यहां तक कि अच्छे दिन लाने का वादा कर एक पार्टी विशेष को लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत भी मिल जाता है। 'अच्छा' शब्द के 'गुड' वाले अर्थ को भुनाने में कोई पीछे नहीं रहना चाहता। बिग बाज़ार की टैग लाईन कहती है– ''इससे सस्ता और अच्छा कहीं नहीं।'', सर्फ का दावा है– ''दाग़ अच्छे हैं'' तो यूनियन बैंक ऑफ इंडिया अपने आप को ''अच्छे लोग, अच्छा बैंक'' बताने से नहीं चूकता। फेवीकॉल के जोड़ को कौन भूल सकता है? जो दावा करता है ''फेवीकॉल का जोड़ – अच्छे से अच्छा भी न तोड़ पाए।''

'अच्छा' शब्द को विभिन्न प्रकार से कैसे प्रयोग किया जाता है, आप स्वयं देखिए – अच्छा का पहला प्रयोग तो आपने देख ही लिया। यदि आपको कोई वस्तु पसन्द आ रही है तो आप कहते हैं कि ''यह अच्छा है।'', ''आज मौसम बहुत अच्छा है।'', ''आज का दिन बहुत अच्छा रहा।'' इत्यादि। यदि 'अच्छा' को थोड़ा धीमी आवाज में कम जोर देकर बोला जाए जैसे – ''अच्छा , ठीक है।'', तो इसका अर्थ है कि आप अनमने भाव से सामने वाले की बात स्वीकार कर रहे हैं। यदि इसी ''अच्छा' को थोड़ा जोर दे कर बोला जाए ''अच्छा! कल देखता हूं तुझे।'' तो यह धमकी का काम करता है। यदि किसी बेढब व्यक्ति से हमारा सामना हो जाए तो भी हम कहते

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई

हैं कि "अच्छे आदमी से पाला पड़ा है।" यदि कोई आपको बताए कि "अरे! तुझे पता है, आज बस में किसी ने मेरा पर्स मार लिया।" आप थोड़े से विस्मय के साथ लम्बा खींचकर बोलते हैं – "अच्छा?" यहां अच्छा का अर्थ यह नहीं है कि आप पर्स चोरी होने पर खुश हैं और बोल रहे हैं कि अच्छा हुआ। यहां अच्छा आपकी हैरानी को दर्शा रहा है। अस्पताल से ठीक या तन्दुरूस्त हो कर आने पर भी कहा जाता है कि रामप्रसाद जी तो अस्पताल से 'अच्छे' होकर आ गए, यहां 'अच्छा' से तात्पर्य रामप्रसाद जी के चरित्र से न होकर उनकी सेहत से है। इसी तरह आप किसी के घर सुबह 10:00 बजे पहुंचते हैं और वह सो रहा हो तो आप आश्चर्य के साथ बोलते हैं– "अच्छा! अभी तक सो रहे हो?"

अच्छा' के साथ ख़ासा जोड़ने पर यह एक अच्छा–ख़ासा शब्द बन जाता है, उदाहरण के लिए – "रामप्रसाद जी अच्छे–खासे व्यक्तित्व के मालिक हैं।" यहां 'अच्छा–ख़ासा रामप्रसाद जी के शानदार व्यक्तिव को प्रतिबिम्बित कर रहा है।

जब दो लोग आपस में बातें कर रहे हों, एक अधिक बोलने वाला हो और दूसरा कम बोलने वाला तो कम बोलने वाला सामने वाले के हर प्रश्न के उत्तर में केवल 'अच्छा' बोल कर ही काम चला लेता हे। सामने वाला भी यह अहसास कर लेता है कि वह उससे पूर्णतः सहमत है। 'अच्छा' का यह प्रयोग दो लोगों से बात करने में बेहद कारगर साबित होता है, एक घर पर पत्नी से और दूसरा कार्यालय में बॉस से बात करने में 'अच्छा' का इस तरह से प्रयोग सामने वाले से आपकी पूर्ण सहमति दर्शाता है। उदाहरण के लिए–

पत्नी : मैं अपनी सहेलियों के साथ फिल्म देखने जा रही हूं।
पति : अच्छा।
पत्नी : ऑफिस से आते समय समोसे लेते आना।
पति : अच्छा।

यदि कोई आपसे बोले कि, "पड़ोस वाले वर्मा जी का लड़का अच्छा पैसा कमा रहा है।" तो यहां 'अच्छा' शब्द का अर्थ 'बहुत' से है। किसी को ढांढस बंधाने के लिए भी अच्छा का प्रयोग किया जाता है। कोई दुःखी हो और किसी से अपने मन की बात न कर पर रहा हो तो आप भरोसा देते हुए कहते हैं–"अच्छा! मुझे बताओ, क्या हुआ?" यदि आप दो बार लगातार अच्छा–अच्छा बोलते हैं तो इसका अर्थ यह "अच्छा! मुझे बताओ, क्या हुआ?" यदि आप दो बार लगातार अच्छा–अच्छा बोलते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं कि आपको दुगुना अच्छा लग रहा है। जब किसी को टालना हो तो आप बोलते हैं, "अच्छा–अच्छा अब बहुत हो गया, कल सुबह देखेंगे।" आप कहीं किसी काम से जाते हैं और परेशानी में पड़ जाते हैं, तो भी आप कहते हैं– "आज तो अच्छे फंस गए।" यहां 'अच्छा' बिल्कुल उल्टे अर्थ में प्रयुक्त हो रहा है।

'अच्छा' शब्द को हिन्दी फिल्मी गीतकारों ने भी बहुत सुन्दरता के प्रयोग किया है। कुछ उदाहरण देखते हैं– 'अच्छा जी मैं हारी, चलो मान जाओ न", "अच्छा, तो हम चलते हैं", "अच्छा सिला दिया तूने मेरे प्यार का" उपरोक्त तीनों गीत 'अच्छा' शब्द के तीन अलग–अलग प्रयोग दर्शाते हैं। इनमें से किसी में भी अच्छा 'गुड' के रूप में प्रयोग नहीं हुआ है। पहले गीत में जहां नायिका, नायक के सामने हार स्वीकार कर रही है तो दूसरे गीत में नायिका, नायक से चलने की अनुमति मांग रही है, वहीं तीसरे गीत में नायक शिकायत कर रहा है कि उसके प्यार को ठुकरा दिया गया है। यही इस 'अच्छा' शब्द की ख़ासियत है कि यह बहुत खूबसूरती से वाक्य में अपना स्थान बना लेता है और प्रयोग के आधार पर अर्थ बदल देता है। हिन्दी और उर्दू दोनों ही भाषाओं में यह इतना अधिक घुल–मिल गया है कि पता ही नहीं चलता कि यह आखिर है कौन–सी भाषा का?

आप भी सोच रहें होंगे कि एक छोटे–से शब्द को लेकर अच्छा–खासा पाठ पढ़ा दिया, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि 'अच्छा' शब्द के इतने अच्छे–अच्छे प्रयोगों को जानने के बाद आप भी अपनी दैनिक बोलचाल की भाषा में इसका अच्छी तरह से प्रयोग करेंगे तथा अच्छे–से–अच्छे व्यक्ति के सामने इस 'अच्छा' शब्द का प्रयोग करने में संकोच नहीं करेंगे।

मेरी रेल यात्रा

* ए.के. भारद्वाज

मेरी कहानी का किरदार गाँव में रहने वाला, सीधा–सादा एक व्यक्ति जिसका नाम भोलूराम है, पर केन्द्रित है।

एक गाँव में एक कम पढ़ा–लिखा हट्टा–कट्टा नौजवान भोलूराम अपने वृद्ध माता–पिता के साथ रहता था। आजीविका के लिए खेती में अपने माता–पिता को सहयोग करता था। जब उसकी आयु 20 वर्ष की हुई और खेती के कार्य से आय कम हो रही थी, तब उसके पिता ने उसे सलाह दी कि बेटा आजीविका के लिए तुम शहर जाकर कोई नौकरी ढूंढ लो जिससे परिवार की गुजर– बसर ठीक प्रकार से चल सके। उसके पिता ने दूर के एक रिश्तेदार जो दिल्ली में एक अच्छे पद पर कार्यरत थे, उनको भी पत्र द्वारा बेटे को नौकरी दिलाने का आग्रह किया। समय अपनी गति से आगे बढ़ रहा था कि एक दिन उनके दूर के रिश्तेदार ने उन्हें पत्र द्वारा सूचित किया कि आप भोलूराम को गाँव से दिल्ली भेज दो, उसको मैं एक प्राइवेट सिक्यूरिटी कंपनी में गार्ड के पद पर लगवा दूँगा। उसे 10,000/रु. प्रति माह प्राप्त हो जाया करेंगे।

पत्र को पढ़कर परिवार में खुशी का माहौल हो गया। उन्होंने भोलूराम को शीघ्र दिल्ली जाने के लिए कहा। भोलूराम दिल्ली जाने की तैयारी में लग गया। भोलूराम का गाँव दिल्ली से लगभग 1000 किलोमीटर दूर था वहाँ बस से जाना संभव नहीं था। उसको उसके दोस्तों ने सलाह दी कि वो किसी एजेंट के पास जाकर रेलवे द्वारा वहॉ (दिल्ली) जाने की टिकट प्राप्त कर ले, उसे यह आइडिया पसन्द आया। वह तुरन्त अपने गाँव से 5 कि.मी. दूर एक कस्बे में, जहाँ एक मात्र कम्प्यूटर नेटवर्क ऑपरेटर टिकट बुक करने का कार्य करता था, के पास पहुँचा और उससे नजदीकी रेलवे स्टेशन से दिल्ली जाने तक का टिकट मांगा।

दो–तीन घंटे बैठने के बाद भी उसको टिकट प्राप्त नहीं हो सका क्योंकि गाँव में पिछले तीन–चार दिन से लाइट नहीं आ रही थी। कम्प्यूटर नहीं चल पा रहा था। ऑपरेटर ने उसे फिर किसी दिन आने को कहा। वो ऑपरेटर के पास हफ्ते में तीन–चार बार गया लेकिन लाइट न आने के कारण टिकट प्राप्त नहीं कर सका। उसके दोस्तों ने उसे फिर नजदीकी रेलवे स्टेशन जाने की सलाह दी। उनकी सलाह पर भोलूराम गाँव से 5 कि.मी. दूर रेलवे स्टेशन पहुँचा और उसने वहाँ उपस्थित कर्मचारी से दिल्ली का टिकट मांगा। कर्मचारी ने भोलूराम को कहा कि वो साधारण टिकट चाहता है या आरक्षित टिकट। वह परेशान हो गया क्योंकि वो कम पढ़ा–लिखा था। उसने कर्मचारी से कहा भईया मुझे बैठकर दिल्ली जाना है। कृपया कोई भी टिकट दे दो। कर्मचारी ने एक फार्म उसको दिया कि इसको भरकर दे दो। उसने फार्म को देखा परन्तु वो उसे भर नहीं सका। वो फिर से परेशान हो गया, इस पर कर्मचारी ने उसे एजेन्ट से मिलने की सलाह दी कि वो फार्म भर देगा एवं टिकट भी करा देगा। भोलूराम टिकट एजेन्ट के पास गया एजेन्ट ने उससे पूछा कि आपको कब जाना है? भोलूराम ने कहा कि हम तो तुरन्त जाना चाहते हैं वहाँ हमारी नौकरी लग गई है, आप सिर्फ टिकट दे दो। भोलूराम का फार्म भरना एजेन्ट ने शुरू किया– नाम पूछा–बता दिया, उम्र पूछी–उसने कहा लिख दो 20 साल, जेन्डर पूछा– उसने कहा पता नहीं–खैर एजेन्ट ने जैन्डर लिख दिया– पूछा–सीट नीचे की या ऊपर की? भोलूराम ने जबाव दिया–भईया कोई भी दे दो। एजेन्ट ने श्रेणी पूछी, तुमको आरक्षण किस श्रेणी का चाहिए? क्योंकि भोलूराम श्रेणी नहीं जानता था इसलिए उसने कहा भईया कोई भी श्रेणी दे दो, पर टिकट दे दो। एजेन्ट ने पूछा कि कितने रुपए लाये हो, उसने बता दिया 'भईया बडी मुश्किल से पिताजी ने 200 रूपए का इंतजाम किया है, उसमें ही टिकट लेना है एवं दिल्ली जाकर व्यवस्था करनी है।' एजेन्ट को गुस्सा आ गया, उसने कहा कि तुम्हें पहले बताना चाहिए था। तुम सिर्फ साधारण टिकट से ही दिल्ली जा सकते हो, उसका किराया 110 रु. है और ऊपर से 50 रू. देना। मैं तुम्हें जनरल डिब्बे में अलग से बैठा दूँगा। भोलूराम तैयार हो गया। एजेंट ने भोलूराम को टिकट दे दिया और कहा कि तुम सुबह 7 बजे वाली ईएमयू पर आ जाना। मैं तुम्हें बैठा दूंगा। खुशी–खुशी भोलूराम अपने घर गया और तैयार होकर माता–पिता से विदा लेकर सही समय पर वो स्टेशन पहुँच गया। उसने एजेन्ट को ढूँढा, ढूंढने पर एजेन्ट मिल गया उसने उसे 50 रु. दिए। एजेन्ट ने उसे एक खाली सीट पर बैठा दिया और कहा कि यह

*भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गाड़ी कानपुर तक जायेगी, तुम कानपुर उतर कर फिर से ऐसी ही अगली गाड़ी जो दिल्ली जायेगी उसमें बैठ जाना।

भोलूराम गाड़ी में बैठ गया और मजे से बैठकर घर से लाया हुआ खाना खाकर निश्चित होकर दिल्ली के लिए चल दिया। परन्तु थोड़ी दूर पर गाड़ी रुकती तो लोग चढ़ते और बैठते, भोलूराम को बैठने में दिक्कत होने लगी। फिर, अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी और लोग चढ़े, भोलूराम की सीट पर बैठते गये। भोलूराम को काफी समस्या हो गई, उसने टिकट दिखाया कि मेरे पास बैठने का टिकट है। यात्रियों ने उसका उपहास उड़ाया कि इस गाड़ी में टिकट नहीं चलता। वो परेशान हो गया। यात्रियों ने उसे खड़ा कर दिया एवं सलाह दी कि अगले स्टेशन पर लोग उतरेंगे फिर बैठ जाना वो क्या करता, खाली सीट होने की प्रतीक्षा करने लगा परन्तु सीट कानपुर पर जाकर मिली चूंकि गाड़ी कानपुर तक ही थी। खैर उसे दिल्ली जाना था, उसने एक आदमी से पूछा कि दिल्ली जाने वाली गाड़ी कब आयेगी –

उसने बताया कि दो घंटे बाद आयेगी वो वहीं प्लेट फार्म पर प्रतीक्षा करने लगा। प्रतीक्षा करते –करते उसे नींद आ गई। गाड़ी कब आई और कब चली गई, पता नहीं चला। नींद खुलने पर फिर से उसने पूछा कि दिल्ली वाली गाड़ी कब आयेगी, उसे बताया गया कि गाड़ी रात्रि को 10 बजे आयेगी वो प्रतीक्षा करने लगा।

रात्रि 10 बजे जब गाड़ी आई तो वो नहीं जानता था कि कौन सी गाड़ी है, उसने पूछा यह दिल्ली जायेगी तो जवाब हाँ में मिला। वो चढ़ गया। संयोग से एक सीट भी खाली मिल गई, वो आराम से बैठकर प्रसन्न हो गया, और सोचने लगा कि अब दिल्ली पहुँच ही जाऊंगा। थोडी देर बाद, वेटर ने आकर पूछा कि आपको खाना वेज चाहिये या नॉनवेज? वो सोचता हुआ बोला– नॉनवेज चाहिए। वो शुद्ध शाकाहारी था परन्तु उसने सोचा कि नॉन का मतलब नहीं से है, वेज का मतलब माँस से है इसलिए उसने नॉनवेज कह दिया, नॉनवेज खाना आ गया। वो चकरा गया। खाना देखकर वेटर पर चढ़ गया। वेटर परेशान हो गया कि, साहब आपने ही तो नॉनवेज खाना बोला था, मैं वही लाया हूँ। उसे अपनी गलती का एहसास हो गया था। वो कुछ नहीं बोला और वेटर से कहा कि मुझे नहीं खाना इसे ले जाओ। वेटर ने पूछा कि आप शाकाहारी हैं या मांसाहारी हैं? उसने बताया कि मैं सभी साग अच्छी तरह से खाता हूं, माँस नहीं खाता। वेटर को हँसी आ गई वो उसकी बुद्धि पर तरस खाकर उसे शाकाहारी खाना देकर चला गया। खाना खाकर, उसने पानी पिया और अपनी नौकरी के बारे में सोचने लगा।

सोचते–सोचते एक घंटा बीत गया। थोड़ी देर बाद टिकट चैकर आ गया। उसने उससे टिकट दिखाने को कहा, उसने मासूमियत से टिकट, टिकट चैकर को दे दी। टिकट चैकर चकरा गया, टिकट तो साधारण ट्रेन का था एवं यह ट्रेन शताब्दी एक्सप्रेस थी। उसने शताब्दी ट्रेन का टिकट दिखाने को कहा, लिस्ट देखी, नाम पूछा, उसने अपना नाम भोलूराम और उम्र बीस साल बताई, टिकट चैकर ने पूरी लिस्ट देखी, कोई भोलूराम नाम का इस गाड़ी में यात्रा करने के लिये यात्री नहीं था।

टिकट चैकर ने उससे कहा जुर्माना लगेगा उसने मासूमियत से कहा कि कैसा जुर्माना, उसके पास 200 रु. थे जिसमें 110 रु. का टिकट खरीदा है और 50 रु. एजेन्ट को सीट पर बैठने के लिये दिये थे। अब मेरे पास सिफ 40 रु. ही बचे हैं। मुझे नौकरी के लिये दिल्ली जाना है।

टिकट चैकर को गुस्सा आ गया उसने पुलिस बुलाकर उसे अगले स्टेशन पर उतार दिया। वो काफी परेशान हुआ, अब क्या होगा। वह सोच ही रहा था कि एक भिखारी उसके पास आया, उसने भीख मांगी तो उसने, उससे दिल्ली जाने वाली गाड़ी के बारे में पूछा और भिखारी को 5 रु. भी दिये। भिखारी ने उसे सलाह दी कि दिल्ली जाने वाली गाड़ी रात्रि को 12 बजे आयेगी, परन्तु वो एक्सप्रैस है? उसमें यात्रा करना साधारण टिकट पर संभव नहीं है। वो परेशान हो गया उसने भिखारी से मदद मांगी कि वो कैसे भी उसे दिल्ली पहुँचने की व्यवस्था करे, भिखारी 20 रु. लेकर राजी हो गया और दोनों रात्रि वाली गाड़ी से दिल्ली के लिए रवाना हो गए। भिखारी द्वारा दिए गए एक कटोरे के कारण वो भीख मांगते–मांगते दिल्ली पहुँच गया। सभी ने उसे भिखारी समझकर कुछ पैसे कटोरे में डाल दिए थे, जब वो दिल्ली उतरा तो उसके पास 200 रु. थे, वो खुश हो गया।

आजकल भोलूराम रोज सुबह–शाम 200 रु. प्रतिदिन एक ट्रेन से दूसरी ट्रेन में यात्रा करके कमाता है। इस प्रकार गार्ड तो नहीं बन सका पर हाँ कमाई गार्ड से अच्छी चल रही है। रेल यात्रा, वह यात्रा है जो कभी भी समाप्त नहीं होती है।

जग-जीवन

* पी. सी. भट्ट

यह जग है अजब पिटारा।
जिसको देखो वही निराला।

कदम–कदम पर अलग दास्तां।
किस–किस के करूं मैं किस्से बयां।

एक वो है जो देता बेहिसाब है।
एक ये जो नाम भी जपते हैं, गिन–गिन कर।

अब से नहीं, युगों से चली आ रही।।
जब से स्वर्ग–नरक, की है हवा बही।

मौत से क्या डर, यह मिन्टों का खेल है।
मुश्किल है, जिन्दगी जिससे वर्षों का मेल है।

जीवन एक अजब पहेली है।
सुलझाने पर भी उलझती जाती है।

कुछ का जीवन ''अहम'' में गुजरा।
कुछ का किसी ''वहम'' में गुजरा।

सब आते हैं, जग में मुठ्ठी बन्द किये हुए।
और जाते है जग से हाथ खुले हुए।।

मौन और मुस्कराहट को गहना बना।
जग–जीवन का चक्र तो ऐसा ही चलता रहेगा

* पूर्व भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सच्चाई

* दिनेश कुमार

भावुक होना छोड़ दिया है,
हां मैंने रोना छोड़ दिया है।

मैंने कितनी बार उठाया,
गिरते लोगों को राहों में,
उनके सारे दुख दर्दों को,
मैं भर लेता था बाहों में।

अब वे पहरेदार हो गये,
मेरा रास्ता रोक दिया है।

मैं कितनी रातों में जागा,
आंखों में कितने सपने पाले,
आज हिसाब करने बैठा तो,
सुनने वालों के पड़ जाएं लाले।

भूल गया आहत यादों को,
होठों को मैंने टोक दिया है।

आज बहुत कुछ सिखा गयी है,
जीवन की मुझको सच्चाई,
वक्त आने पर साथ ना देती,
मानव की अपनी परछाईं।

अब कोई एहसास ना होगा,
दिल को मैंने तोड़ दिया है,
भावुक होना छोड़ दिया है,
हां, मैने रोना छोड़ दिया है।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (भुगतान), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गुदड़ी के लाल

t;'kdj çlkn dk tUe 30 tuojh] 1890 dks okjk.klh esa gqvk FkkA Nk;kokn ds çeq[k lLFkkid dfo;ksa esa t;'kdj çlkn th dk uke vkrk gSA mUgksaus 47 o"kksZ dh NksVh lh thoudky esa dforkj ukVd] miU;kl] dgkuh vkSj vkykspukRed fucU/k vkfn fo/kkvksa esa leku :i ls mPp dksfV dh jpuk;sa fy[khA mudh çcU/k dk0; ^dkek;uh^ vkSj ukVd ^pUæxqIr^ dk fgUnh lkfgR; esa fo'ks"k LFkku çkIr gSA mudh jpukvksa esa dkek;uh ¼çcU/k dk0;½] dkuu dqlqe] >juk] ygj ¼dfork laxzg½] /kzqoLokfeuh] tUest; dk ukx;K ¼ukVd½] dadky] frryh] bjkorh ¼miU;kl½] vkdk'knhi ¼dgkuh laxzg½ vkfn çeq[k gSA

दीर्घ निश्वासों का क्रीड़ा–स्थल, गर्म–गर्म आँसुओं का फूटा हुआ पात्र! कराल काल की सारंगी, एक बुढ़िया का जीर्ण कंकाल, जिसमें अभिमान के लय में करुणा की रागिनी बजा करती है।

अभागिनी बुढ़िया, एक भले घर की बहू–बेटी थी। उसे देखकर दयालु वयोवृद्ध, हे भगवान! कहके चुप हो जाते थे। दुष्ट कहते थे कि अमीरी में बड़ा सुख लूटा है। नवयुवक देश–भक्त कहते थे, देश दरिद्र है, खोखला है। अभागे देश में जन्मग्रहण करने का फल भोगती है। आगामी भविष्य की उज्ज्वलता में विश्वास रखकर हृदय के रक्त पर सन्तोष करे। जिस देश का भगवान् ही नहीं, उसे विपत्ति क्या! सुख क्या!

परन्तु बुढ़िया सबसे यही कहा करती थी–"मैं नौकरी करूँगी। कोई मेरी नौकरी लगा दो।" देता कौन? जो एक घड़ा जल भी नहीं भर सकती, जो स्वयं उठ कर सीधा खड़ी नहीं हो सकती थी, उससे कौन काम कराये? किसी की सहायता लेना पसन्द नहीं, किसी की भिक्षा का अन्न उसके मुख में पैठता ही न था। लाचार होकर बाबू रामनाथ ने उसे अपनी दुकान में रख लिया। बुढ़िया की बेटी थी, वह दो पैसे कमाती थी। अपना पेट पालती थी, परन्तु बुढ़िया का विश्वास था कि कन्या का धन खाने से उस जन्म में बिल्ली, गिरगिट और भी क्या–क्या होता है। अपना–अपना विश्वास ही है, परन्तु धार्मिक विश्वास हो या नहीं, बुढ़िया को अपने आत्माभिमान का पूर्ण विश्वास था। वह अटल रही। सर्दी के दिनों में अपने ठिठुरे हुए हाथ से वह अपने लिए पानी भर के रखती। अपनी बेटी से सम्भवतः उतना ही काम कराती, जितना अमीरी के दिनों में कभी–कभी उसे अपने घर बुलाने पर कराती।

बाबू रामनाथ उसे मासिक वृत्ति देते थे और भी तीन–चार पैसे उसे चबेनी के, जैसे और नौकरों को मिलते थे, मिला करते थे। कई बरस बुढ़िया के बड़ी प्रसन्नता से कटे। उसे न तो दुःख था और न सुख। दुकान में झाड़ू लगाकर उसकी बिखरी हुई चीजों को बटोरे रहना और बैठे–बैठे थोड़ा–घना जो काम हो, करना, बुढ़िया का दैनिक कार्य था। उससे कोई नहीं पूछता था कि तुमने कितना काम किया। दुकान के और कोई नौकर यदि दुष्टतावश उसे छेड़ते भी थे, तो रामनाथ उन्हें डाँट देता था।

वसन्त, वर्षा, शरद और शिशिर की सन्ध्या में जब विश्व की वेदना, जगत् की थकावट, धूसर चादर में मुँह लपेट कर क्षितिज के नीरव प्रान्त में सोने जाती थी, बुढ़िया अपनी कोठरी में लेट रहती। अपनी कमाई के पैसे से पेट भरकर, कठोर पृथ्वी की कोमल रोमावली के समान हरी–हरी दूब पर भी लेट रहना किसी–किसी के सुखों की संख्या है, वह सबको प्राप्त नहीं। बुढ़िया धन्य हो जाती थी, उसे सन्तोष होता।

एक दिन उस दुर्बल, दीन, बुढ़िया को बनिये की दुकान में लाल मिरचें फटकना पड़ा। बुढ़िया ने किसी–किसी कष्ट से उसे सँवारा। परन्तु उसकी तीव्रता वह सहन न कर सकी। उसे मूर्च्छा आ गयी। रामनाथ ने देखा, और देखा अपने कठोर ताँबे के पैसे की ओर। उसके हृदय ने धिक्कारा, परन्तु अन्तरात्मा ने ललकारा। उस बनिया रामनाथ को साहस हो गया। उसने सोचा, क्या इस बुढ़िया 'को पिन्सिन' नहीं दे सकता? क्या उनके पास इतना अभाव है? अवश्य दे सकता है। उसने मन में निश्चय किया। "तुम बहुत थक गयी हो, अब तुमसे काम नहीं हो सकता।" बुढ़िया के देवता कूच कर गये। उसने कहा–"नहीं नहीं, अभी तो मैं अच्छी तरह काम कर लेती हूँ।" "नहीं, अब तुम काम करना बन्द कर दो, मैं तुमको घर बैठे दिया करूँगा।"

"नहीं बेटा! अभी तुम्हारा काम मैं अच्छा–भला किया करूँगी।" बुढ़िया के गले में काँटे पड़ गये थे। किसी सुख

की इच्छा से नहीं, पेन्शन के लोभ से भी नहीं। उसके मन में धक्का लगा। वह सोचने लगी–''मैं बिना किसी काम के किये इसका पैसा कैसे लूँगी?'' ''क्या यह भीख नहीं?'' आत्माभिमान झनझना उठा। हृदय–तन्त्री के तार कड़े होकर चढ़ गये। रामनाथ ने मधुरता से कहा–''तुम घबराओ मत, तुमको कोई कष्ट न होगा।'' बुढ़िया चली आयी। उसकी आँखों में आँसू न थे। आज वह सूखे काठ–सी हो गयी। घर जाकर बैठी, कोठरी में अपना सामान एक ओर सुधारने लगी। बेटी ने कहा–''माँ, यह क्या करती हो?''

माँ ने कहा–''चलने की तैयारी करो।''

रामनाथ अपने मन में अपनी प्रशंसा कर रहा था, अपने को धन्य समझता था। उसने समझ लिया कि हमने आज एक अच्छा काम करने का संकल्प किया है। भगवान् इससे अवश्य प्रसन्न होंगे।

बुढ़िया अपनी कोठरी में बैठी–बैठी विचारती थी, ''जीवन भर के संचित इस अभिमान–धन को एक मुठ्ठी अन्न की भिक्षा पर बेच देना होगा। असह्य! भगवान् क्या मेरा इतना सुख भी नहीं देख सकते! उन्हें सुनना होगा।'' वह प्रार्थना करने लगी।

''इस अनन्त ज्वालामयी सृष्टि के कर्त्ता! क्या तुम्हीं करुणा–निधान हो? क्या इसी डर से तुम्हारा अस्तित्व माना जाता है? अभाव, आशा, असन्तोष और आर्तनादों के आचार्य! क्या तुम्हीं दीनानाथ हो? तुम्हीं ने वेदना का विषम जाल फैलाया है? तुम्हीं ने निष्ठुर दुःखों के सहने के लिए मानव–हृदय–सा कोमल पदार्थ चुना है और उसे विचारने के लिए, स्मरण करने के लिए दिया है अनुभवशील मस्तिष्क? कैसी कठोर कल्पना है, निष्ठुर! तुम्हारी कठोर करुणा की जय हो! मैं चिर पराजित हूँ।''

सहसा बुढ़िया के शीर्ण मुख पर कान्ति आ गयी। उसने देखा, एक स्वर्गीय ज्योति उसे बुला रही है। वह हँसी, फिर शिथिल होकर लेट रही।

रामनाथ ने दूसरे ही दिन सुना कि बुढ़िया चली गयी। वेदना–क्लेशहीन–अक्षयलोक में उसे स्थान मिल गया। उस महीने की पेन्शन से उसका दाह–कर्म करा दिया। फिर एक दीर्घ निश्वास छोड़कर बोला, ''अमीरी की बाढ़ में न जाने कितनी वस्तु कहाँ से आकर एकत्र हो जाती हैं, बहुतों के पास उस बाढ़ के घट जाने पर केवल कुर्सी, कोच और टूटे गहने रह जाते हैं। परन्तु बुढ़िया के पास रह गया था सच्चा स्वाभिमान गुदड़ी का लाल।''

मैं तेरे पास हूं ना

*** बलवान सिंह**

Unkl u gkuk] D;k dh e rj ikl g uk
lkeu ugh] vkl&ikl g e]
iydk dk cUn dj] fny l ;kn dj
vkj dkb ugh] e rjk fo'okl g uk
nkLrh fdlh l dN ; fuHkk yk
dh ml d lkj xe pjk yk
bruk vlj dj Mkyk dh [kn Hkh vk dj dg

dh ge Hkh viuh nkLr cuk yk
ftUnxh ,d ,lh lkxkr gkrh g
ftl [k'kh vkj xe l eykdkr gkrh g
dN ikuk g rk xgjkb;k e mrjuk lh[kk
fdukjk l rk ftUnxh 'k:vkr gkrh gA
pUn yEgk dh fdrkc g ftUnxh
lklk [;kyk dk fglkc g ftUnxh

dN t:jr ijh] dN [okfg'k v/kjh
cl bUgh lokyk dk tokc g ftUnxh
'kek tydj Hkh c> ldrh g
d'rh rQku dh gn l xtj ldrh g
ftUnxh l ; ek;l u gk] rdnhj dHkh Hkh
cny ldrh gA

*कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जिंदगी... कैसी है पहेली

* महिमानन्द भट्ट

आजकल किसी से पूछो–कैसे हो, कुछ नया, कोई नई बात? जवाब मिलता है–ठीक हैं, क्या नया होगा। बस टाइमपास। कुछ ऐसे ही सवाल–जवाब सुनने को मिलते हैं, आजकल। ऐसा लगता है मानो लाचार हैं, कहीं फंस गए हैं। माना कि जिंदगी एक पहेली है, और कभी एक जैसी नहीं रहती। कभी हम उँचाईयों पर होते हैं और कभी उतार पर। दोनों ही जिंदगी का सच है इसलिए दोनों ही मामलों में सहज रहने की कोशिश करनी चाहिए अर्थात न तो उँचाई के वक्त किसी बात का अहम होना चाहिए, और न ही उतार के वक्त अपने को कमजोर समझना चाहिए। इंसान जिंदगी की शुरूआत से ही जीने के लिए संघर्ष करता है। आपाधापी में जी रहा है। आज लक्ष्य तक पहुँचने के लिए एक तेज और सूक्ष्म प्रतियोगिता जैसी हो रही है। एक इंसान दूसरों को धक्का देकर, गिराकर उनके कंधों पर चढ़ कर दुनियां का सुख पाना चाहता है, ऐसा करके इंसान, इंसान की तरह तो दिखता है पर वह अपनी आत्मीयता खो देता है।

प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से होते विकास की वजह से दुनियां इतनी आकर्षक होती जा रही है कि इंसान असलियत से दूर अपनी सीमाओं को भूल जाता है। यह जरूर है कि दुनियां जितनी प्रोफेशनल है उतनी ही कठोर होती जा रही है। आज हम ऐसे समय में जी रहे है जहॉ ध्यान भटकाने वाली कई चीजें हैं। जो समय का सही इस्तेमाल कर पाते हैं वह आज की जिंदगी को बेहतर ढंग से जीते हुए आगे बढ़ रहे हैं। डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने अपनी पुस्तक 'विग्स आफ फायर' में लिखा है कि प्रत्यक व्यक्ति चाहे वह अपने जीवन में सफल हो अथवा असफल, सबको पूरे दिन में सिर्फ चौबीस घंटे ही मिलते हैं। समय के मामले में भगवान और व्यवस्था किसी के साथ भेदभाव नहीं करते। यह व्यक्ति के प्रतिभा और सोच पर निर्भर करता है कि वह समय का समुचित उपयोग करके उसका फायदा उठाकर अपने जीवन को सफल बनाए। यह एक सच्चाई है कि, खाली दिमाग शैतान का घर होता है। जब किसी के पास बड़ी जिम्मेदारी नहीं होती तो वह समय के महत्व को नहीं समझ पाता, इसलिए वह अपने बहुमूल्य समय को उल्टे–सीधे कामों में लगाता है। एक सफल व्यकित के पास हमेशा समय की कमी होती है। समय निर्धारित करने से काम के प्रति एक प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी आती है। किसी ने ठीक ही कहा है कि–'सपनों से उत्तरदायित्व आते हैं और उत्तरदायित्व से समय के मूल्य का पता चलता है।'

किसी सफल व्यक्ति और दूसरों के बीच अंतर ताकत का नहीं, ज्ञान का नहीं बल्कि इच्छा–शक्ति का होता है। जिंदगी के सफर में नैतिक और मानवीय उद्देश्यों के प्रति मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है। आत्मविश्वास सभी गुणों को एक जगह बाँध देता है यानि विश्वास की रोशनी में मनुष्य का संपूर्ण व्यक्तित्व और आदर्श उजागर होता है। एक प्रसिद्ध युक्ति है कि–जब कोई आदमी ठीक काम करता है तो उसे पता तक नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है। पर गलत काम करते समय उसे हर क्षण यह ख्याल रहता है कि वह जो कर रहा है, वह गलत है। जो लोग अच्छे कार्य करते हैं वे निश्चित रूप से दर्पण जैसा जीवन जीते हैं। वे स्वंय के पसीने से अपना भाग्य लिखते हैं।

हम कुछ और सोचें तो देखेंगे कि वह जीवन ही क्या जिसमें खुशी नाम की महक न हो! इसका मूल कारण हमारे अंदर प्रबल इच्छा–शक्ति की कमी होना है जो हमें खुश रहने के लिए दृढ बनने नहीं देती। मनुष्य का मस्तिष्क इतना शक्तिशाली है कि यदि वह ठान ले कि 'मुझे सदैव खुश रहना है तो कोई ताकत उसे उसके इस दृढ संकल्प से हिला नहीं सकती। मनुष्य के भीतर कुछ जन्मजात शक्तियां होती हैं जो उसे किसी नकारात्मक भाव से दूर ले जाने और उपलब्ध विकल्पों में से श्रेष्ठ विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करते हैं। जिंदगी सिर्फ हासिल होने का नाम नहीं है, यह तय है कि कुछ खोएगा भी और कुछ हाथ में आते–आते रह जाता है। इस खोने से कुछ पाने का सूत्र हासिल कर लिया जाए तो मन को शांति मिलती है। इसलिए यह कहते हैं कि कामयाबी के लिए कमियों का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। हमारा वर्तमान संघर्ष और भविष्य अंधेरे में कहीं छिपा होता है। रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में–वर्तमान की कुछ मत पूछो, एक बूंद वह जल है। अभी हाथ आया तुरंत, वह अभी बिखर जाएगा और भविष्य के वन में फैला घनघोर तिमिर है। जावेद अख्तार लिखते हैं–हर तरफ,

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हर जगह बेशुमार आदमी। फिर भी तनहाइयों का शिकार आदमी। सब कहते हैं कि आदमी रहस्यमय प्राणी है। वह दुनियां के सारे भेद तो जान लेने की कोशिश करता है, पर अपने भीतर नहीं झांक पाता। जब हम झुकते हैं तभी अपने भीतर झांक सकते हैं। आज की परिस्थिति में शायद कुछ लोग झुकना भूल गए हैं इसका कारण पैसा, पद और प्रतिष्ठा भी हो सकता है, पर यह व्यक्ति–विशेष पर ही निर्भर करता है। निदा फाज़ली का एक मशहूर शेर है – 'हर आदमी में होते हैं दस–बीस आदमी, जिसको भी देखना हो कई बार देखना।'

जब हम किसी वस्तु का उपयोग करना बंद कर देते हैं तो वह वस्तु धीरे–धीरे नष्ट हो जाती है। मस्तिष्क के साथ भी यही बात है। जो लोग कार्य करते समय अपने मस्तिष्क का प्रयोग नहीं करते, उनकी सोचने–समझने की शक्ति धीरे–धीरे कम होती जाती है। एक ही तरह का काम करने के बजाय अलग–अलग तरह की गतिविधियों में संलग्न रहना चाहिए। इससे जोश, ऊर्जा, धैर्य व चिंतन के साथ अपने मस्तिष्क से सकारात्मक दिशा में काम लेना चाहिए। काम को जिसने काम समझकर किया, उसे ही काम का आनंद हासिल हो सकता है। काम पर आस्था, ईश्वर पर आस्था की तरह है। काम करने से जीवन का रास्ता आसान हो जाता है और यह बेहतर इंसान बनाने में सहायक होता है। लीडस के लिए ऑफिस में पहुँचकर सबसे पहला काम, काम करना होता है। वे ज़रूरी कामों को प्राथमिकता से पूरा करने की अहमियत समझते हैं जिनसे सबसे अधिक परिणाम हासिल किए जाने हैं। यह दुनियां विशाल है, जहां अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल अपने विकास के साथ दूसरों की भलाई में किया जा सकता है। आज की स्थिति यह भी है, कि कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें केवल काम के समय एक–दूसरे की याद आती है, और यह भी होता है कि ज़रूरत पूरी होने के बाद उनसे एक धन्यवाद का शब्द भी सुनने की इच्छा अधूरी रह जाए। ऐसी स्थिति में स्वंय पर गर्व करते हुए यह सोचना चाहिए कि जो आपको ज़रूरत पर याद करते हैं उनके लिए आप रोशनी की तरह हैं।

जब हम किसी यात्रा के लिए निकलते हैं तो यह वाक्य अक्सर पढ़ने को मिलता है कि यात्री अपने सामान की सुरक्षा स्वंय करें। यही जीवन–यात्रा का सच है। हर व्यक्ति को अपनी जीवन–यात्रा में कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना होता है जैसे–वाणी की मधुरता की, संस्कारों की सुगंध की, आपसी जुड़ाव की, नीति एवं निष्ठा की और सच्चाई की प्रतिष्ठा की। यह ज़रूरी है कि हम पुराने विचारों का आदर करें और नए विचारों का स्वागत करें। हम अपनी ज़िंदगी में कई बार कामयाबी की तरफ देखते हैं, पर क्या कामयाबी की कोई शर्त तय होती है, शायद नहीं। हमें यह सोचना चाहिए कि हम जहां भी खुश हैं वही हमारी कामयाबी है। अगर हम खुश ही नहीं हैं तो फिर कामयाबी किस बात की। जिस कार्य में रूचि हो, उसे वही कार्य करना चाहिए क्योंकि मन से किया गया काम सबसे अच्छा होता है।

कहा जाता है कि जीवन एक बड़ी पुस्तक है। इसका प्रत्येक दिन एक–एक पृष्ठ है। असल में सबसे पहले हमें खुद को जानना चाहिए क्योंकि अपने को ठीक से जानकर ही अपनी सोच बनती है और वही सोच हमें सही और गलत फैसले लेने की ताकत देती है। ठीक ही कहा गया है कि जीवन जीने के दो तरीके हैं–पहला चिंतन का और दूसरा अनुभव का। चिंतन के लिए मन एकाग्र होना जरूरी है और विचारों से मुक्त होकर ही चिंतन किया जा सकता है। इसलिए अतीत के बारे में सोचना भी बुरी आदत है। हम यह नहीं सोचते कि अतीत तो पहले ही पीछे छूट गया है अब वह हमारे हाथ तो आना नहीं है, फिर उसके लिए बैचेनी क्यों? आज जो हमारे हाथ में है वही हमारा वर्तमान और भविष्य है। जब हम इस बारे में नहीं सोचते तो छोटी–छोटी चीजों को लेकर भी तनावग्रस्त रहना हमारी एक आदत–सी हो जाती है। हम काम को जितना अधिक बोझ के रूप में लेते हैं, उतना ही तनाव बढ़ता है। काम वह है जो खुशी से किया जाए और वही कला है। वास्तव में बिना खुशी के सृजन नहीं हो सकता। जो जीवन में खुश रहना सीख लेते हैं उनका जीवन बीतता नहीं बल्कि जीवन का सृजन होता है। इसके लिए जीवन को व्यस्त रखना पड़ता है। जब व्यक्ति व्यस्त नहीं रहता तो उसके दिमाग में चिंता और परेशानियॉ अपना

घर बनाने लगती हैं जिनसे उसे अनेक तरह ही बीमारियां लग जाती हैं। अधिकतर शारीरिक तथा मानसिक बीमारियों का केन्द्र खाली समय में चिंता में घिरे रहना है।

जिंदगी में हमें अपनी सोच में खुशी का संचार करना चाहिए। हमें खुश रहने के लिए प्रकृति ने अपना विपुल भंडार खोल रखा है। मसलन, हमारे पास नींद का मधुर मरहम है, शांति की गोद है, उत्साह की रोशनी है, विवेकपूर्ण दृष्टि है, दोस्तों के प्रेम की प्रेरणा है। इन सबको शामिल करते हुए जिंदगी में खुश रहने के तरीके निकाले जा सकते हैं। एक व्यक्ति अपने छोटे–से घर को सजाकर, अपनी पुस्तकों को व्यवस्थित कर या अपने आस–पास के सुख–दुःख में शामिल होकर अपनी जिंदगी खुशनुमा बना सकता है। कभी–कभी छोटी–सी बात में दिया गया बड़ा ज्ञान हमारी सोच को बदल देता है। एक कहानी में एक चिड़िया की ज्ञानपूर्ण सलाह है कि – एक आदमी ने एक चिड़िया पकड़ी। चिड़िया बोली तुमने इतने जानवर मारकर खाए, पर संतुष्ट नहीं हुए, मुझसे क्या होगा। मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हें ऐसी तीन सलाह दूँगी, जो तुमको खुश रखेंगी। आदमी को सोचते हुए देखकर वह बोली– कभी किसी की बेवकूफी भरी बातों पर विश्वास मत करना। शिकारी को छोड़ते ही बोली– बीती बात पर अफसोस मत करना। मेरे शरीर में एक बड़ा और महंगा मोती है, उससे तुम्हारी किस्मत जाग सकती थी, मगर वह तुम्हारी किस्मत में नहीं था। सुनते ही वह आदमी रोने लगा। चिड़िया ने फिर कहा– मैंने अभी कहा था कि बीती बात पर अफसोस मत करना और पहली बात कही थी कि बेवकूफी भरी बात पर विश्वास मत करना। मेरे छोटे से शरीर में इतना बड़ा–सा रत्न कैसे हो सकता है। आदमी ने कहा–अब तीसरी सलाह तो दे दो। चिड़िया ने जवाब दिया–पहली बात तो मानी नहीं और बताकर क्या फायदा। और वह उड़ गई। तात्पर्य है कि छोटी–सी बात में दिया गया यह बड़ा ज्ञान हमें याद दिलाता है कि अपने सारे ज्ञान और बुद्धि के गुमान के बावजूद इंसान छोटी–छोटी व्यावहारिक बातों को भुलाकर कितनी मुश्किलों का सामना करता रहता है।

बीते समय में किए अच्छे कामों का फल अवश्य मिलता है, चाहे वह निवेश हो, पढ़ाई हो, सही खान–पान हो या फिर व्यायाम। लेकिन क्या आज का कोई महत्व नहीं है, नहीं आज का भी सर्वश्रेष्ठ महत्व है। एक चीनी कहावत है कि–किसी पेड़ को लगाने का सर्वश्रेष्ठ समय बीस साल पहले था और दूसरा सर्वश्रेष्ठ समय आज है। वही सबसे सुखी है, चाहे राजा हो या किसान, जो अपने घर में शांति पाता है। जितना हम अपनी ताकत व उपयोगिता को जानते हैं उतना दूसरों पर कम निर्भर होते हैं। महात्मा गांधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है– मेरा यह विश्वास बन गया है कि यदि नीयत साफ हो तो संकट के समय साधन कहीं न कहीं से आ जुटते हैं। अतः जिंदगी के अनेक पहलुओं पर नजर डालने से हमें मालूम पड़ता है कि हम स्वंय किस प्रकार अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। जिंदगी सचमुच एक पहेली है जिसका हल हमें अपने विवेक, सामर्थ्य और सोच के आधार पर निकालना चाहिए।

गणतंत्र दिवस पर गर्व है, ऐसा राष्ट्रीय पर्व है

*** एस० के दुबे**

लोग सोचते थे शायद, यह देश नहीं चल पायेगा
जाति, धर्म और भाषाओं से, टुकड़ो में बंट जाएगा
छोटे–छोटे देश बनेंगे, नहीं विकास हो पाएगा
आपस में ही झगड़ा करके, फिर गुलाम हो जाएगा
प्रान्तों, वर्गों को जोड़ा है ऐसे लोकतंत्र पर गर्व है
गणतंत्र दिवस पर गर्व है। ये ऐसा राष्ट्रीय पर्व है।
नहीं किसी से डरना है, नहीं किसी की सहना है।
नहीं किसी से लड़ना है, आपस में मिल रहना है।
हम सब भारतवासी हैं, हमें यही बस कहना है।
जो मौलिक अधिकार है, उन अधिकारों में रहना है।
लोकतंत्र में न्यायपालिका और संविधान पर गर्व है।
गणतंत्र दिवस पर गर्व है। ये ऐसा राष्ट्रीय पर्व है।

यहाँ सिखों की गुरुवाणी, सदज्ञान का बखान है।
ईसाईयों की प्रार्थना है और मौलवियों की अजान है।
यहाँ प्रेम की गंगा बहे, और संतजन का ज्ञान है।
अनेकता में एकता ही, मेरे देश की पहचान है।
विविधताओं से बनी धरती हमारी स्वर्ग है,
गणतंत्र दिवस पर गर्व है। ये ऐसा राष्ट्रीय पर्व है।
लोकतंत्र से हमारी, आन, बान और शान है।
लोकतंत्र जनता का शासन, लोकतंत्र से जान है।
लोकतंत्र से मिला, विश्व में सम्मान है।
लोकतंत्र के ही कारण, मेरा देश महान है।
लोकतंत्र से खुशी, न हो तो बेड़ा गर्क है,
गणतंत्र दिवस पर गर्व है। ये ऐसा राष्ट्रीय पर्व है।

* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

आकांक्षा और महत्वाकांक्षा

* मीनाक्षी गंभीर

आजकल कामकाजी जीवन में घर और दफ्तर के व्यस्ततम काम–काजों के चलते बमुश्किल किसी को वो पल नसीब होता है, जब कोई कुछ समय फुर्सत से कहीं बैठ सके। इंसान फुर्सत में जब बैठा हो तब पुरानी खट्टी–मीठी यादें ताजा हो जाना स्वाभाविक है। उस क्षण में उन बातों पर भी ध्यान चला आता है जिस पर कभी अपनी व्यस्तम जिंदगी में ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। आज मुझे महसूस होता है कि निश्चय ही वो लोग कितना खुशनसीब होते हैं जिन्हें फुर्सत के कुछ पल मिल पाते हैं और कुछ क्षण वह शांत चित्त रह सकते हैं। जब मनुष्य शांत चित्त होता है तब वास्तव में वह आत्म–चिंतन की ओर अग्रसर होता है। आज मुझे वो पल नसीब हुए।

कुछ पुरानी बातें भी याद आ रहीं हैं। बचपन में जब कोई पूछता कि मैं क्या बनना चाहती हूँ, तब झटपट जवाब देती कि मुझे मजिस्ट्रेट बनना है। उन दिनों पिताजी मुझ पर गुस्सा भी बहुत होते थे। वे गुस्से में अक्सर कहते थे, "इच्छा करना उचित है, क्योंकि इच्छा जगाने से कार्य करने के प्रति भाव जागृत होता है। इच्छा–पूर्ति हेतु कड़ी मेहनत करनी होती है, किंतु बिना कर्म किये बड़ी–बड़ी बातें सोचना केवल स्वप्न देखना है।" परन्तु आपको स्वप्न देखने से कौन रोक सकता है। महत्वकांक्षा को मानो पर से लगे हुए थे, कभी मन में ये आता कि इंजीनियर होकर ऊँचे महल सजाऊँ, कभी जी में आता, डॉक्टर बन रोते हुए को हँसाऊँ, कभी ये सोचती कि ऑफ़िसर बन कर हुक़्म चलाऊँ, कभी मज़दूर होने का जी करता ताकि उनके सुख–दुख में हाथ बँटाऊँ। परन्तु कौन जानता था कि क्या होगा मेरा भविष्य?

किंतु मुझमें कुछ बनने की लालसा बनी रही, जिसके फलस्वरुप मुझे कुछ अच्छी नौकरी मिली। सफलता मिलने से मेरी महत्वाकांक्षा बढ़ गई। मेहनत करना जारी रखा और एक–एक कर मुझे प्रोन्नत्ति भी मिली।

हर शख्स का जिंदगी को लेकर कुछ न कुछ सपना होता है। लेकिन किसी का सपना थोड़ा छोटा होता है और किसी का इतना बड़ा कि उसे पूरा करने के लिए वो शख्स कोई भी रास्ता अख्तियार कर लेता है। आकांक्षा–महत्वाकांक्षा हर किसी के मन में जन्म लेती रहती है। दोनों में पर्याप्त अंतर होता है। व्यक्ति के मन में आकांक्षा स्वाभाविक रूप से आती है, लेकिन जब महत्वाकांक्षा मन में जन्म लेती है, तो व्यक्ति उन्हें पूरा करने में सब कुछ लगा देता है। कहते हैं कि जीवन व्यर्थ होगा अगर हमारे पास जीने की कोई वजह न होगी, महत्वाकांक्षा न होगी, लक्ष्य न होगा। अधिकतर लोग जीवन में इसलिए सफल होते है क्योंकि उनके पास कोई लक्ष्य है। लक्ष्य चाहे बुरा हो या अच्छा, वह हमें कवायद कर देता है।

*dku dgrk g l jk[k vklek e gk ugȧ ldrk]
,d iRFkj rk rfc;r l mNkyk ;kjk*A

vkdk{kk vkj egRokdk{kk ¼Aspiration and Ambition½ के बीच महीन–सी रेखा होती है और हम कब उस महीन रेखा को पार कर जाते हैं, पता ही नहीं चलता। महानता की प्राप्ति निःसन्देह महत्वाकांक्षाओं की प्रेरणा से ही होती है। परन्तु हमारी महत्वाकांक्षाएँ निकृष्ट और अशुभ कदापि न हों, ये ध्यान रखना चाहिए। जिसमें जिस प्रकार की आकांक्षा होती है, वह उसी प्रकार का मार्ग तथा उसी प्रकार की गतिविधि अपनाता है। यदि उसकी आकांक्षा प्राणवती तथा सच्ची है, तो वह उसके लिए उतना ही त्याग एवं बलिदान करने को तत्पर रहता है। आकांक्षा और महत्वाकांक्षा दोनों ही शब्द समान अर्थ का आभास देते

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) का कार्यालय, नई दिल्ली

हैं, पर हैं वे एक–दूसरे के विरोधाभासी। महत्व दिखाने की महत्वाकांक्षा–मैं बॉस बनना चाहता हूं। मैं सौ बीघा जमीन का कृषक, मैं मुख्यमंत्री बनना चाहता हूं, मैं प्रधानमंत्री...। न जाने कितनी तरह की इच्छाएं लोगों के मन में जन्म लेती रहती हैं और हर व्यक्ति इसे पूर्ण करने के प्रयास में जुटा रहता है। जिन इच्छाओं में अपना महत्व या रुतबा दिखाने–बढ़ाने की चाह हो, वह महत्वाकांक्षा है। अक्सर देखने को मिलता है कि लोग अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के चक्कर में उन लोगों को दुख पहुंचा देते हैं, जो उनकी मदद ही करते हैं। वो चाहे घर–परिवार के लोग हों या फिर दोस्त। अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के चक्कर में वे इतना खो जाते हैं कि उन्हें यह भी ध्यान नहीं रहता है कि वे किसी का दिल दुखा रहे हैं। अपनी इन्हीं गलतियों के कारण वे सबसे अलग भी हो जाते हैं।

विनोबा भावे कहते हैं कि ÞegRokdk{kk dk mn; eu e gkrk g] rk vkdk{kk dk mnxe LFky vkRek

gA ;gh otg g fd egRokdk{kk e Lofgr çèkku gkrk g] rk vkdk{kk e ijfgr e[; gkrk gAÞ महत्वाकांक्षा के एक–दूसरे से विपरीत दो रूप होते है– एक शुभ तथा दूसरा अशुभ। महत्वाकांक्षा बुरी नहीं होती है, लेकिन जब व्यक्ति उन्हें प्राप्त करने के लिए गलत मार्ग अपना लेता है तो यही उसका पतन का कारण बन जाती है। कई राजा, सम्राटों का इसी कारण पतन हो गया। सिकन्दर निःसन्देह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति था, विश्व विजयी बनने के लिए उसने अथक प्रयास किया, कष्ट उठाए और अन्ततः अनेकानेक देशों पर विजय प्राप्त की। फिर भी उसे इतिहास के उज्ज्वल पृष्ठों पर लिखे जाने का गौरव नहीं मिला क्योंकि उसकी महत्वाकांक्षा अशुभ थी। विजय के पीछे उसका कोई भी मांगलिक उद्देश्य नहीं था। निरर्थक अशांति, अराजकता, युद्ध और रक्तपात, व्यक्तिगत अहंकार का दोषी होने के कारण ऐतिहासिक होकर भी सिकन्दर महान, आदर का पात्र न बन सका। उसे अपकीर्ति के सिवा कुछ नहीं मिल सका। दूसरी ओर चाणक्य राजनीति क्षेत्र का महान व्यक्ति है। उसका उद्देश्य, उसकी महत्वाकांक्षा का ध्येय और उसके सारे युद्धों का लक्ष्य शुभ था। सिकन्दर तथा चाणक्य दोनों युद्ध के हेतु रहे। किन्तु इतिहास में चाणक्य को ही यशस्वी माना जाता है। सिकन्दर ने जीवन भर दुनिया के अनेक देशों को लूटा किन्तु साथ में क्या ले गया। बहुमूल्य धातुओं, रत्नों के ढेर पड़े रहे और दोनो खाली हाथ फैलाकर मौत के मुंह में समा गया। सब कुछ यहीं रह गया। अनेक बार तो ऐसा होता है कि जीवन भर कष्ट सहकर जो वैभव अर्जित किया जाता है उसका वारिस उस धन को धूल की तरह दुष्कर्मों में उड़ाकर कंगाल हो जाया करते हैं।

मानव जीवन की आत्म शान्ति जिन बातों से भंग होती है, उसमें एक महत्वपूर्ण बात है, अति आकांक्षा। जन्म से मौत की दहलीज तक सिर्फ ये महत्वाकांक्षा दिल में गुलाटी मारती है कि जिन्दगी में कुछ तो करना है, महान बनना है, नाम–पैसा–शोहरत कमाना है। कुछ तो करना है का 'कुछ' बस यहीं तक सिमट कर रह जाता है और कई बार हम इस 'कुछ' को परिभाषित भी नहीं कर पाते या कहें कि पहचान ही नहीं पाते। दिल में गुलाटी मारती आकांक्षाओं का 'कुछ' दरअसल इतना महीन है कि हम उसे पकड़ ही नहीं पाते और बहुत कुछ मिल जाने पर भी कुछ न पाने की टीस सालती रहती है। मानव स्वभाव ही ऐसा है कि 'सपने अगर पूरे हो जायें तो लगता है बहुत छोटा सपना देखा, कुछ बड़ा सोचना था और यदि पूरे न हों तो लगता है कि कुछ ज्यादा बड़ा सपना देख लिया। सफलता का इंतजार बेचैन किये रहता है। असंतुष्टि दोनों जगह विद्यमान रहती है। सफलता, खुद अपने आप में एक ऐसी माया है, जिसे परिभाषित नहीं किया जा सकता। जिसके भ्रम में इन्सान बहुत कुछ गवां देता है और जब वांछित की प्राप्ति होती है तो जो चीजें इसे पाने के लिए खोयी हैं, उनकी कीमत समझ आती है और वो इस सफलता से कहीं बड़ी महसूस होती हैं। सफलता की तलाश इतनी भ्रामक है कि जिन्दगी ख़त्म हो

जाती है पर तलाश ख़त्म नहीं होती। दर्शनशास्त्र में इसे मृगतृष्णा कहते हैं। रेगिस्तान में जैसे पानी का भ्रम मृग के प्राण ले लेता है, कुछ ऐसा ही दुनिया में इन्सान के साथ सफलता के भ्रम में घटित होता है और कदाचित इन्सान को ये तथाकथित सफलता हासिल हो भी जाये तो वो उस सफलता के शिखर पे नितांत अकेला होता है।

एक किस्सा याद आ रहा है। केलिफोर्निया में एक बार कुछ वर्ष पहले कि बात है, एक आदमी ने सात हत्याएं कीं, दो घंटे के भीतर। जो मिला उसको शूट कर दिया। यह भी नहीं देखा, किसको शूट कर रहा है। पीछे से भी मार दी गोली लोगों को और उसने जिनको गोली मारी, उनका चेहरा भी नहीं देखा था पहले कभी। उस पर जब अदालत में मुकदमा चला तो मजिस्ट्रेट भी हैरान था। उसने पूछा तुमने यह किया क्यों? अरे, लोगों की कोई दुश्मनी होती है तो कोई किसी को मारता है, समझ में आता है, कोई तर्क है तुम्हारे पास? तुमने तो ऐसे आदमियों को मारा, जिनको तुमने जिंदगी में पहले कभी देखा भी नहीं था। इसमें एक आदमी तो पहली बार ही केलिफोर्निया आया था और उसका तुमने चेहरा भी नहीं देखा था, पीछे से गोली मार दी। उस आदमी ने कहा, "मुझे इसकी कोई फिक्र नहीं। मैं अपनी तस्वीर अखबारों में देखना चाहता हूं। अरे, जिंदगी यूं ही चली जा रही है, कोई चर्चा ही नहीं। आज हर जबान पर मेरा नाम है। जो देखो मेरी बात कर रहा है। जिंदगी सफल हो गयी। अब फांसी लगे, कोई फिक्र नहीं, उसकी भी चर्चा होगी। मर जाऊंगा, मगर याद छोड जाऊंगा।"

महत्त्वाकाँक्षा यों तो प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है, पर यह अनियंत्रित होने पर दुःख–शोक का कारण बनती है। मनुष्य को महत्वाकांक्षी होना चाहिए, महत्वाकांक्षा से ही मनुष्य महान बनता है। बिना ऊँची कल्पना और आकांक्षा के वह यों ही सामान्य स्थिति में पड़ा रहता है, किन्तु अपनी महत्वाकांक्षा में शुभ–अशुभ का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

जब बात आकांक्षा और महत्वाकांक्षा की हो रही हो और माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित कविता þ,d Qy dh pkgþ का ज़िक्र न हो तो बात अधूरी–सी लगती है।

चाह नहीं मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी–माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव,
पर, हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के शिर पर,
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ!
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

इच्छा से ही मनुष्य प्रेरणा प्राप्त करता है और प्रेरणा के अनुसार ही गतिविधि अपनाता है। मनुष्य की क्रियाएँ उसकी इच्छाओं का ही खेल है। जो महान आकांक्षाएँ रखता है, वह उसी के अनुसार कार्य कर महान बन जाता है। महत्वाकांक्षा में लोक कल्याण, सामाजिक हित अथवा आत्मोद्धार की भावना होनी चाहिए। अपयश और अशांति देने वाली महानता से शान्ति–सन्तोष और सुख दायक सामान्यता हजारों– लाखों गुना अच्छी है।

क्या आप ?

- ❖ स्वयं हिन्दी में कार्य करते हैं और दूसरों का भी प्रेरित करते हैं?
- ❖ अपने कार्यस्थल पर हिन्दी के प्रति अनुकूल वातावरण बनाए रखते हैं?
- ❖ अपने नाम पट्ट, विजिटिंग कार्ड, नोटिस बोर्ड पर सूचनाएं हिन्दी में भी तैयार करते है?
- ❖ कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करते हैं?

;fn gk] rks vki jktHkk"kk ds lPps fgek;rh gSA

केंद्रीय भंडारण निगम ने

केंद्रीय भंडारण निगम ने 02 मार्च, 2016 को देशभर में 60वां स्थापना दिवस मनाया। श्री रामविलास पासवान, माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री ने नई दिल्ली में आयोजित समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने क्षेत्रीय कार्यालयों को कार्य-निष्पादन, हिंदी में उत्कृष्ट कार्य एवं विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार वितरित किए। माननीय मंत्री जी ने केंद्रीय भंडारण निगम के कार्य-निष्पादन की प्रशंसा की। सुश्री वृंदा सरूप, सचिव (खाद्य

स्थापना दिवस मनाया

एवं सार्वजनिक वितरण), केंद्रीय भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक श्री हरप्रीत सिंह, निदेशक (वित्त) श्री वी.आर.गुप्ता, निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस.कौशल, निदेशक (एमसीपी) श्री एस. सी. मुडगेरिकर, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री एस.एस.बधावन, आई.एफ.एस. तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे। केंद्रीय भंडारण निगम के कर्मचारियों तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों सहित उनके परिवारजन इस समारोह में शामिल हुए।

महाराणा प्रताप: वीरता के प्रतीक

* नम्रता बजाज

राजस्थान की भूमि सदा से ही महापुरुषों और वीरों की भूमि रही है। यह धरती हमेशा से ही अपने वीर सपूतों पर गर्व करती रही है। उन्हीं में से एक थे महाराणा प्रताप। यहाँ के इतिहास में महाराणा प्रताप एक महान विभूति व शूरवीरता के प्रकाश स्तम्भ के रूप में आज भी जीवित हैं। वह एक स्वाभिमानी राजपूत, वीर सेनानी, स्वतंत्रताप्रिय एक कर्मठ योद्धा और अत्यंत भावुक व्यक्ति थे। आज अनेक वर्षों के बाद भी महाराणा प्रताप का नाम उदयपुर के वायुमंडल में चारों ओर फैला है। महाराणा के साथ–साथ उनके साहसी घोड़े चेतक को भी उदयपुरवासी भूल नहीं पाए हैं। चेतक एक असामान्य घोड़ा था। महाराणा प्रताप के घोड़े को जितनी ख्याति प्राप्त हुई, उतनी संसार में किसी भी पशु को कभी कहीं प्राप्त नहीं हुई। राणा प्रताप का चेतक के साथ एक असाधारण संबंध था जिसके कारण उन्हें चेतक से असीम प्रेम था। चेतक भी अपने प्रिय स्वामी की जीवन रक्षा के लिए अंत तक जूझता रहा। जब मुगल सेना महाराणा प्रताप के पीछे लगी थी, तब चेतक प्रताप को अपनी पीठ पर लिए 26 फीट के उस नाले को लांघ गया, जिसे मुगल पार न कर सके।

कविवर श्री श्यामनारायण पांडे द्वारा महाराणा के घोड़े चेतक पर लिखी 'चेतक की वीरता' नामक कविता की कुछ पंक्तियां प्रस्तुत हैं –

रण बीच चौकड़ी भर–भर कर चेतक बन गया निराला था,
राणा प्रताप के घोड़े से पड़ गया हवा का पाला था।
जो तनिक हवा से बाग़ हिली लेकर सवार उड़ जाता था,
राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था।

महाराणा प्रताप सिंह (शुक्ल तृतीया रविवार विक्रम संवत 1597 तदानुसार 9 मई 1540–29 जनवरी 1597) उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। स्वाधीनता एवं भारतीय संस्कृति की अभिरक्षा के लिए इस वंश ने जो अनुपम त्याग और अपूर्व बलिदान दिये वह सदा स्मरण किये जाते रहेंगे। मेवाड़ की वीर प्रसूता धरती में रावल बप्पा, महाराणा सांगा, महाराण प्रताप जैसे शूरवीर, यशस्वी, कर्मठ, राष्ट्रभक्त व स्वतंत्रता प्रेमी विभूतियों ने जन्म लेकर न केवल मेवाड़ वरन् संपूर्ण भारत को गौरवान्वित किया है। स्वतन्त्रता की अलख जगाने वाले प्रताप आज भी जन–जन के हृदय में बसे हुये, सभी स्वाभिमानियों के प्रेरक बने हुए हैं। महाराणा प्रताप का जन्म राजस्थान के कुम्भलगढ़ में हुआ। उनके पिता का नाम महाराणा उदयसिंह एवं माता का नाम जैवन्ताबाई था, जो पाली के सोनगरा अखैराज की बेटी थी। महाराणा प्रताप को बचपन में कीका के नाम से पुकारा जाता था। महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक गोगुन्दा में हुआ।

प्रताप की वीरता ऐसी थी कि उनके दुश्मन भी उनके युद्ध–कौशल के कायल थे। माना जाता है कि इस योद्धा की मृत्यु पर अकबर की आंखें भी नम हो गई थीं। उदारता ऐसी कि दूसरों की पकड़ी गई बेगमों को सम्मानपूर्वक उनके पास वापस भेज दिया था। इस योद्धा ने साधन सीमित होने पर भी दुश्मन के सामने सिर नहीं झुकाया और जंगल के कंद–मूल खाकर लड़ते रहे। सन् 1572 में मेवाड़ के सिंहासन पर बैठते ही उन्हें अभूतपूर्व संकटों का सामना करना पड़ा, मगर धैर्य और साहस के साथ उन्होंने हर विपत्ति का सामना किया। मुगलों की विराट सेना से हल्दी घाटी में उनका भारी युद्ध हुआ। वहाँ उन्होंने जो पराक्रम दिखाया, वह भारतीय इतिहास में अद्वितीय है, उन्होंने अपने पूर्वजों की मान–मर्यादा की रक्षा की और प्रण किया कि जब तक अपने राज्य को मुक्त नहीं करवा लेंगे, तब तक राज्य–सुख का उपभोग नहीं करेंगे। तब

* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

से वह भूमि पर सोने लगे और अरावली के जंगलों में कष्ट सहते हुए भटकते रहे, परन्तु उन्होंने मुग़ल सम्राट की अधीनता स्वीकार नहीं की। उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना जीवन होम कर दिया। यद्यपि महाराणा प्रताप शक्तिशाली मुगलों को पराजित नहीं कर पाए, पर उन्होंने वीरता का जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह अद्वितीय है। उन्होंने जिन परिस्थितियों में संघर्ष किया, वे वास्तव में जटिल थीं, पर उन्होंने हार नहीं मानी। यदि राजपूतों को भारतीय इतिहास में सम्मानपूर्ण स्थान मिल सका तो इसका श्रेय मुख्यतः राणा प्रताप को ही जाता है। उन्होंने अपनी मातृभूमि को न तो परतंत्र होने दिया, न ही कलंकित। विशाल मुग़ल सेनाओं को उन्होंने लोहे के चने चबाने पर विवश कर दिया था। मुगल सम्राट अकबर उनके राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाना चाहते थे, किन्तु राणा प्रताप ने ऐसा नहीं होने दिया और आजीवन संघर्ष किया। कर्नल टॉड सहित कई विदेशी इतिहासकारों ने उनके स्वाभिमान की प्रशंसा की है।

वास्तव में, जब महाराणा प्रताप का जन्म हुआ, उस समय दिल्ली पर सम्राट अकबर का शासन था। वह सभी राजा–महाराजाओं को अपने अधीन कर मुगल साम्राज्य का ध्वज फहराना चाहता था। वहीं, मेवाड़ की भूमि को मुगल आधिपत्य से बचाने के लिए महाराणा प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक मेवाड़ आजाद नहीं होगा, मैं महलों को छोड़ जंगलों में निवास करूंगा। अकबर ने कहा था कि अगर राणा प्रताप मेरे सामने झुकते हैं तो आधे हिंदुस्तान के वारिस वो होंगे पर बादशाहत अकबर की रहेगी। जवाब में प्रताप ने कहा था कि स्वादिष्ट भोजन को त्याग कंदमूल फलों से ही पेट भरूंगा, लेकिन अकबर का अधिपत्य कभी स्वीकार नहीं करूंगा। महाराणा प्रताप का भाला 81 किलो वजन का था और उनके छाती का कवच 72 किलो का था। उनके भाला, कवच, ढाल और साथ में दो तलवारों का वजन मिलाकर 208 किलो था। महाराणा प्रताप का वजन 110 किलो और लम्बाई 7 फीट 5 इंच थी। यह बात अचंभित करने वाली है कि इतना वजन लेकर राणा प्रताप रणभूमि में लड़ते थे।

21 जून, 1576 ई० को हल्दी घाटी नामक स्थान पर हल्दी घाटी में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच ऐसा युद्ध हुआ, जो पूरी दुनिया के लिए आज भी एक मिसाल है। इसमें 14 हजार राजपूत मारे गये थे। इतिहासकार मानते हैं कि इस युद्ध में कोई विजय नहीं हुआ पर देखा जाए तो इस युद्ध में महाराणा प्रताप सिंह विजय हुए क्योंकि अकबर की विशाल सेना के सामने मुट्ठीभर राजपूत कितने देर टिक पाते पर यह युद्ध पूरे एक दिन चला और राजपूतों ने मुग़लो के छक्के छुड़ा दिए। सबसे बड़ी बात यह है कि यह युद्ध आमने–सामने लड़ा गया था। महाराणा कि सेना ने मुगल कि सेना को पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया और मुगल सेना भागने लगी थी। महाराणा प्रताप ने शक्तिशाली मुगल बादशाह अकबर की 85000 सैनिकों वाली विशाल सेना के सामने अपने 20000 सैनिक और थोड़े–से संसाधनों के बल पर स्वतंत्रता के लिए वर्षों संघर्ष किया। 30 वर्षों के लगातार प्रयास के बावजूद अकबर महाराणा प्रताप को बंदी न बना सका। परिणाम यह हुआ कि वर्षों प्रताप जंगल की खाक छानते रहे, घास की रोटी खाई और निरन्तर अकबर के सैनिकों का आक्रमण झेला, लेकिन हार नहीं मानी। ऐसे समय भीलों ने इनकी बहुत सहायता की। अन्त में, भामा शाह ने अपने जीवन में अर्जित पूरी सम्पत्ति प्रताप को दे दी जिसकी सहायता से राणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ को छोड़कर अपने सारे किले 1588 ई० में मुगलों से छीन लिए।

अकबर महाराणा प्रताप का सबसे बड़ा शत्रु था, पर उनकी यह लड़ाई कोई व्यक्तिगत द्वेष का परिणाम नहीं थी, वरन् सिद्धांतों और मूल्यों की लड़ाई थी। इसमें एक वह था जो अपने क्रूर साम्राज्य का विस्तार करना चाहता था, जबकि एक तरफ महाराणा थे जो अपनी भारत माँ की स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहे थे। महाराणा प्रताप की मृत्यु पर अकबर को बहुत दुःख हुआ क्योंकि हृदय से वो महाराणा प्रताप के गुणों का प्रशंसक था और जानता था कि महाराणा जैसा वीर इस धरती पर कोई नहीं है। अकबर को जब खबर मिली कि महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई है, उस वक्त उसकी मनोदशा पर अकबर के दरबारी दुरसा आढ़ा ने राजस्थानी छंद में जो विवरण लिखा वो कुछ इस तरह है:–

अस लेगो अणदाग पाग लेगो अणनामी
गो आडा गवड़ाय जीको बहतो घुरवामी
नवरोजे न गयो न गो आसतां नवल्ली

न गो झरोखा हेठ जेठ दुनियाण दहल्ली
गहलोत राण जीती गयो दसण मूंद रसणा डसी
निसा मूक भरिया नैण तो मृत शाह प्रतापसी

अर्थात्–

हे गुहिलोत राणा प्रतापसिंघ तेरी मृत्यु पर शाह यानि सम्राट ने दांतों के बीच जीभ दबाई और निश्वास के साथ आंसू टपकाए क्योंकि तूने कभी भी अपने घोड़ों पर मुगलिया दाग नहीं लगने दिया। तूने अपनी पगड़ी को किसी के आगे झुकाया नहीं, हालांकि तू अपना आडा यानि यश या राज्य तो गंवा गया लेकिन फिर भी तू अपने राज्य के धुरे को बांए कंधे से ही चलाता रहा। तेरी रानियां कभी नवरोजों में नहीं गईं और ना ही तू खुद आसतों यानि बादशाही डेरों में गया। तू कभी शाही झरोखे के नीचे नहीं खड़ा रहा और तेरा रौब दुनिया पर गालिब रहा। इसलिए मैं कहता हूं कि तू सब तरह से जीत गया और बादशाह हार गया।

ई.पू. 1579 से 1585 तक पूर्व उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार और गुजरात के मुग़ल अधिकृत प्रदेशों में विद्रोह होने लगे थे ओर महाराणा भी एक के बाद एक गढ़ जीतते जा रहे थे। अतः परिणामस्वरूप अकबर उस विद्रोह को दबाने मे उलझा रहा और मेवाड़ पर से मुगलों का दबाव कम हो गया। इस बात का लाभ उठाकर महाराणा ने ई.पू. 1585 में मेवाड़ मुक्ति प्रयत्नों को ओर भी तेज कर लिया। महाराणा की सेना ने मुगल चौकियों पर आक्रमण शरू कर दिए और तुरंत ही उदयपुर समेत 36 महत्वपूर्ण स्थान पर फिर से महाराणा का अधिकार स्थापित हो गया। महाराणा प्रताप ने जिस समय सिंहासन ग्रहण किया, उस समय जितने मेवाड़ की भूमि पर उनका अधिकार था, पूर्ण रूप से उतने ही भूमि भाग पर अब उनकी सत्ता फिर से स्थापित हो गई थी। बारह वर्ष के संघर्ष के बाद भी अकबर उसमें कोई परिवर्तन न कर सका और इस तरह महाराणा प्रताप लंबे संघर्ष के बाद मेवाड़ को मुक्त करने मे सफल रहे और ये समय मेवाड़ के लिए एक स्वर्ण युग साबित हुआ। मेवाड़ पर लगा हुआ अकबर ग्रहण का अंत ई.पू. 1585 में हुआ। उसके बाद महाराणा प्रताप उनके राज्य की सुख–सुविधा में जुट गए परंतु दुर्भाग्य से उसके ग्यारह वर्ष के बाद ही 19 जनवरी, 1597 में अपनी नई राजधानी चावंड मे उनकी मृत्यु हो गई। महाराणा प्रताप सिंह के डर से अकबर अपनी राजधानी लाहौर लेकर चला गया और महाराणा के स्वर्ग सिधारने के बाद आगरा ले आया।

महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के एक अत्यंत गौरवशाली पात्र हैं। उनके त्याग, शौर्य और राष्ट्रभक्ति की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। वह भारत में शौर्य, साहस और स्वाभिमान का प्रतीक हैं। 'एक सच्चे राजपूत, शूरवीर, देशभक्त, योद्धा, मातृभूमि के रखवाले के रूप में महाराणा प्रताप दुनिया में सदैव के लिए अमर हो गए। मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए अपने पूरे जीवन का बलिदान करने वाले ऐसे वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप और उनके स्वामिभक्त अश्व चेतक को प्रत्येक भारतवासी कोटि–कोटि प्रणाम करता है।

बचपन का जीवन

* सच्चिदानंद राय

हम छोटे थे, गम छोटे थे,
कम में रहना हम सीखे थे।
ज्यों–ज्यों उम्र बढ़ी जब आगे,
लगे दूर अपनों से भागे।
रिश्ता में अब रहा न प्यार,
बच कर और सम्हलकर यार,
सबकी अपनी–अपनी राह,
किसी की सुन ने की नहीं चाह।
ऊपर–ऊपर सुन लेते हैं,
ये ऐसे ही कहते हैं।
कितना घिस गया सब रिश्ता?
बचपन से पचपन में पिसता
हे भगवान! बचपन लौटा दो,
जीने की हमें राह सीखा दो।

* प्रबंधक, सीएफएस, अम्बाड–I, नासिक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई

आँगन का पंछी : कौआ

* डॉ. मीना राजपूत

पक्षियों का संसार बहुत बड़ा है। काले, सफेद, हरे, नीले, पीले, जामुनी, रंग–बिरंगे भिन्न–भिन्न रंग–रूप, गुण, चाल–ढाल और स्वभाव के ये पक्षी हमारे पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। इनके क्रियाकलापों से धरती पर पर्यावरण का सन्तुलन बना रहता है। कुछ पक्षी पंख फैलाकर स्वच्छन्द आसमान में अत्यन्त ऊँचाई पर उड़ते हैं तो कुछ मात्र दो–चार फुट का फासला ही तय कर पाते हैं। कुछ पक्षी जंगलों में, झाड़ियों में तथा वृक्षों पर घोंसला बनाकर रहते हैं तो कुछ पक्षी घोंसला न बनाकर पेड़ की कोटर में अपना आशियाना बनाते हैं। कठफोड़वा पक्षी काठ में छिद्र कर रहता है। कुछ पक्षी दुर्गम स्थानों, ध्रुवीय प्रदेशों में अत्यन्त ठण्डे स्थानों में भी निवास करते हैं। जहाँ मांसाहारी पक्षी मांस, मछली तथा कीड़े–मकौड़े खाकर अपना पेट भरते हैं, वहीं शाकाहारी पक्षी अनाज के दाने, फल, फलियाँ तथा सब्जियाँ खाते हैं।

पक्षियों की रंग–बिरंगी दुनिया हमें बहुत कुछ सिखाती है। पक्षी अपने आप में प्रकृति का रहस्य हैं और समाज को किसी–न–किसी रहस्य को समझाने का प्रयत्न करते हैं। पक्षियों की इंद्रियातीत शक्ति को मानव समाज ने सदियों से समझने की चेष्टा की और कहावतों, किंवदंतियों व मिथकों में उन्हें सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। शुक और सारिका पक्षी वाचालता एवं वाक्पटुता के लिए, लवा पक्षी सौम्य भाव के लिए, सुरखाब सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है तो उल्लू मूर्खता का प्रतिरूप माना गया है। बारिश के पूर्वानुमान के लिए भड्डरी प्रसिद्ध है। कोयल, पपीहा, तोता आदि पक्षियों का मृदुल स्वर तो चिड़िया का चहचहाना हमें आकर्षित करता है। बया जहाँ अपने घोंसले की कारीगरी के लिए, वहीं कौआ सूखी और पतली टहनियों से किसी ऊँची डाल पर बनाए जानेवाले अपने बेहद भद्दे घोंसले के लिए प्रसिद्ध है। कौआ बड़ा निर्भीक पक्षी है, आकाश में चील से लड़ता है और जमीन पर कुत्ते, बिल्ली से। हमेशा विपक्षियों से विद्रोह और कूटनीति के जरिये स्वहित को प्राप्त कर लेने के कारण ही कौआ पक्षीराज है।

पक्षियों में अगर कोई पक्षी सबसे ज्यादा नापसंद किया जाता है तो वह है कौआ। इसका कारण है उसकी कर्ण कर्कश वाणी। यह बात अलग है कि यह माना जाता है कि सिखाए जाने पर कौआ आदमी की बोली की नकल भी कर लेता है। कौआ कबूतर के आकार का काले रंग का एक पक्षी है। यह संसार के प्रायः सभी भागों में पाया जाता है। विदेशों में इसकी अनेक जातियाँ पायी जाती हैं, किन्तु भारत में घरेलू कौआ, जंगली कौआ तथा काला कौआ पाया जाता है। जंगली कौआ पूरी तरह से काले रंग का होता है, जबकि घरेलू कौआ गले में एक भूरी पट्टी लिए हुए होता है। इसकी लम्बाई लगभग 20 इंच होती है। नर और मादा कौए एक ही प्रकार के दिखाई देते हैं। संस्कृत में इसे 'काक', 'काकल', राजस्थानी भाषा में 'कागला', मारवाड़ी में इसे 'हाडा' कहते हैं। हिन्दी की देशी बोलियों में इसके लिए 'कागा' व 'कौआ' शब्द प्रचलित हैं। अंग्रेजी में कौए को 'क्रो' कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि

कौए की एक ही आँख होती है, इसलिए इसे 'एकाक्ष' या 'काणाकौआ' भी कहते हैं।

भारतीय लोक साहित्य एवं मिथकों में अनेकानेक पक्षियों की किसी–न–किसी रूप में चर्चा है, पर उनमें कौए का स्थान सबसे अलग है। माना जाता है कि मानव जीवन से अटूट सम्बन्ध रखने वाले पशु–पक्षियों में कौए को भविष्य में होने वाली सारी घटनाओं का पहले से ही अंदाजा हो जाता है। प्राचीन काल में आम लोगों के लिए यातायात और डाक की कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी, तब सूचना

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई

का संवाहक यही कौआ बाबुल या अम्मा की ममतामयी डोर से जोड़े रखता था। अनेक भाषाओं के लोकगीतों में ऐसी पंक्तियाँ मिलती हैं – कागा रे मोरे बाबुल से कहियो....., कागा रे मोरी अम्मा से कहियो...। प्रवासी प्रियजन से संवाद करने के लिए परिवारजन, विशेषतः प्रवासी पुरुष की पत्नी काग उड़ा–उड़ाकर अथवा कौए की बोली सुनकर, जमीन पर चिह्न अंकित कर या तृणमूल के टुकड़े अँगुलियों से माप कर उसके शुभ समाचार, गृह आगमन की सूचना पाने की चेष्टा किया करती थीं। प्रिय आगमन की सूचना पाने को आतुर प्रेमिकाएं कौए को दूध–भात खिलाने और सोने से चोंच मढ़वाने का लालच देती हुई कहतीं –

lku e<kÅ¡ rjh pkpyh] vkj :i e<kÅ¡ rj i[kA

कहा जाता है कि अगर कौआ घर की पूर्व दिशा में बोले तो शुभ समाचार आता है, पश्चिम दिशा में बोले तो मेहमान आते हैं, उत्तर दिशा में बोले तो घर में लक्ष्मी आती है और दक्षिण दिशा में बोले तो बुरा समाचार आता है। यदि कौआ 'क्वा–क्वा' बोले तो उस घर के वासियों का कल्याण होता है। 'कू–कू' बोले तो प्रियजनों से भेंट होती है, 'कु–कु' बोले तो पुत्र लाभ होता है, 'के–के' स्त्री लाभ एवं 'को–को' भोगों की प्राप्ति का संकेत होता है। 'की–की' बोलने पर इच्छित भोजन की प्राप्ति होती है। कौए के रोने की–सी आवाज 'कूर्राह–कूर्राह' सामूहिक विपत्ति का संकेत होती है। इस प्रकार कौए अपने दर्शन, वाणी, रुदन, चिल्लाहट, मार्ग विरोध आदि से आने वाले शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार की भावी घटनाओं की सूचनाओं का संकेत देते हैं। इसी विश्वास के आधार पर मिथकों में काग उड़ाने, काग के बोलने एवं कागा के संदेश ले जाने की चर्चा की गई है।

कौआ बहुत ही बुद्धिमान पक्षी है। कौए की बुद्धिमानी और समझ की एक कथा बहुत प्रचलित है–एक कौए को प्यास लगी। उसे एक छत पर एक घड़ा दिखायी दिया, जिसकी तली में थोड़ा–सा पानी था। ज्ञानी कौआ चुन–चुन कर कंकर लाया और घड़े में डालता गया। पानी का स्तर उसकी चोंच की पहुँच तक आया तो उसने पानी पी कर अपनी प्यास बुझायी। कौए खाना प्राप्त करने के लिए भी सूखी डंडी या पत्ती का इस्तेमाल करते हैं। खोदने, भुरभुरा या मुलायम करने, मोड़ने या कुछ मिलाकर नए प्रकार का खाद्य तैयार करने में भी ये महारथी होते हैं। कौए की याददाश्त भी कमाल की होती है। अपनी याददाश्त के बल पर कौए अपने लिए सुरक्षित रखे गए भोजन को भूख लगने पर प्राप्त कर लेते हैं। सामाजिक सम्बन्धों का महत्व समझने वाले ये कौए भोजन कभी भी अकेले नहीं करते। हमेशा अपना भोजन अपने परिवार, किसी साथी और बन्धुओं के साथ मिल बाँट कर ही खाते हैं। किसी कौए की मृत्यु हो जाए तो कौए काँव–काँव कर साथी कौओं को इकट्ठा कर लेते हैं और उस दिन उसका कोई भी साथी भोजन नहीं करता। समूह में रहते और विहार करते ये कौए मानव जाति को संगठन–सूत्र का पाठ पढ़ाते हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि कौओं का दिमाग लगभग उसी तरीके से काम करता है जैसे चिम्पांजी और मानव का। कौए इतने चतुर व चालाक होते हैं कि चेहरा देखकर ही जान जाते हैं कि कौन खुराफाती है और कौन दोस्त। कौओं की लाजवाब चतुराई के चलते ही इस्राइली कौओं की कुछ प्रजातियों को इतना प्रशिक्षित कर लिया जाता है कि वे मछलियाँ पकड़ने के लिए ब्रेड के टुकड़ों को सही जगह ले जाने का काम निपटा देते हैं। कौए में एक और खास बात होती है कि ये मीलों तक बिना थके उड़ान भर सकते हैं।

मनुष्य की तरह कौओं का भी अपना नीति शास्त्र है, जो हमारे शिष्टाचार से काफी मिलता–जुलता है। इन्हें भी अपने समाज में अनुशासन के नियमों का कठोरता से पालन करना पड़ता है। इनके समूह में यदि कोई कौआ ऐसा कार्य करता है जिससे उस समूह या जाति पर कलंक लगे तो इनकी पंचायत जुड़ती है। सैंकड़ों कौए इकट्ठे होते हैं। सभा का अध्यक्ष अपने फैसले के मुताबिक मुजरिम कौए को दण्ड देता है। एकत्रित कौए झपट कर उस मुजरिम पर इतना प्रहार करते हैं कि वह शीघ्र ही ढेर हो जाता है। कहते हैं कि अन्य पशु–पक्षियों की तरह कौओं में भी पहरेदार रखने की रीति है। एक बार कौओं का एक झुंड एक खेत में दाना चुगने गया। खेत के साथ एक खाई थी और उसके किनारे पर एक सूखे पेड़ का ठूँठ था। कौओं ने अपना एक पहरेदार वहाँ बैठा दिया। परन्तु खेत का मालिक पहरेदार कौए की आँख बचाकर खाई में उतर गया और उसने वहाँ से गोली चलानी शुरू कर दी। कई कौए मारे गए, कुछ उड़ गए और लगभग 12–13 कौए घृणा भरी काँव–काँव के साथ पहरेदार कौए पर टूट पड़े। उन्होंने उसे बड़ी निर्दयता से घायल कर दिया और उसे अपने समाज से ही नहीं, अपितु वन से भी बहिष्कृत कर दिया। शत्रु के आने की चेतावनी देना पहरेदार का कर्तव्य था, परन्तु वह तो पहरे की जगह पर सो गया था। पशु–पक्षी समाज में विश्वास भंग करने

वाले को विश्वासघाती मनुष्य से कहीं अधिक कठोर दण्ड दिया जाता है क्योंकि उनके जगत के नीति नियमों का उनकी सुरक्षा से गहरा सम्बन्ध होता है और जो उनका पालन नहीं करता, वह अपने साथ अपने साथियों के जीवन को भी खतरे में डालता है।

बेवजह दूसरों से तुलना करके मायूस होने की बजाय ईश्वर ने हमें जो दिया है, उसी में खुश रहने से सम्बन्धित कौए पर एक कहानी है। एक कौआ अपनी ज़िंदगी से बड़ा सन्तुष्ट था, लेकिन एक दिन सफेद हंस को देखकर उसे लगा कि मैं बहुत काला हूँ। उसने हंस को कहा – "तुम तो दुनिया के सबसे खुशकिस्मत पक्षी हो।" हंस बोला – "तोते को देखने से पहले मैं भी ऐसा ही मानता था, लेकिन दो रंगों वाला तोता ही सबसे खुशकिस्मत है।" कौआ तोते के पास गया। तोते ने कहा–"जब तक मैंने मोर को नहीं देखा था, मैं बड़ा खुश था। मेरे पास तो सिर्फ दो ही रंग हैं, लेकिन मोर के पास अनेक रंग हैं।" अब कौआ मोर से मिलने चिड़ियाघर जा पहुँचा। वहाँ मोर को देखने लोगों की भीड़ जुटी थी। कौआ मोर से बोला–"तुम्हें देखने तो इतने लोग आते हैं और मुझे देखते ही उड़ा देते हैं। तुम सबसे खुशकिस्मत पक्षी हो।" मोर बोला–"सोचता तो मैं भी यही था, लेकिन खूबसूरती के कारण ही मुझे यहाँ पिंजरे में बन्द कर दिया गया है। कौआ ही एक ऐसा पक्षी है जिसे पिंजरे में बन्द नहीं किया जाता। काश ! मैं भी कौआ होता तो आजाद होता।"

कौए जितने क्रूर व चालाक हैं, उतने ही उदार व परोपकारी जीव भी हैं। ये अपने वृक्ष की डालियों पर दूसरे पक्षियों को घोंसला बनाने देते हैं। कभी–कभी दूसरे पक्षियों के अंडे व बच्चों की रक्षा भी करते हैं। शिष्टाचार का सबसे बड़ा लक्षण सहिष्णुता है और कौए दूसरों के प्रति भरपूर सहिष्णुता व सहनशीलता दिखाते हैं। ये जाति धर्म निभाना भी जानते हैं। कोयल जहाँ अपने अंडे इनसे धूर्ततापूर्वक सेवाती है, वहाँ यह काम ये स्वेच्छा से करते हैं व कोयल के अण्डों को अपना मान कर पालते हैं।

कौए बहुत ढीठ, उद्दंड व धूर्त पक्षी माने जाते हैं, परन्तु प्राचीन ग्रन्थों में कौए का गुणगान भी हुआ है। कौए के परिश्रम को विद्यार्थी के 5 लक्षणों में से एक माना गया है–

dkx p"Vk] cdk è;ku] Üoku fuæk rFkkopA
vYigkjh] xgR;kxh] fo|kFkÊ ipy{.keAA

अर्थात् विद्यार्थी में कौए की भाँति लक्ष्य को पाने का प्रयास करने व प्रयत्नशील रहने, बगुले की तरह ध्यान व एकाग्रता, कुत्ते की तरह चौकसी नींद, स्वल्प भोजन तथा गृह त्याग व सुख से दूर रहने का गुण होना चाहिए।

कौए में भीतर और बाहर से एक जैसा होने का गुण भी होता है। इससे सम्बन्धित एक दोहा है –

eu e|yk ru mtyk] cx|yk d|lk Hk[kA
b.kl| rk dkxk Hkyk] Hkhrj&ckgj ,dAA

अर्थात् बगुले का तन उजला तो मन मैला होता है। उसे देख कर हर कोई भ्रम में पड़ जाता है, जबकि कौआ कोई दिखावा नहीं करता। वह भीतर और बाहर से एक जैसा होता है। इसलिए अगर कोई व्यक्ति दिखने में सुन्दर हो, परन्तु उसका मन मैला हो तो उसकी तुलना बगुले से यह कहते हुए की जाती है कि वह एकदम बगुले के समान है और उससे तो कौआ ही अच्छा है, जो भीतर–बाहर एक समान है, जिससे उसे जानने में किसी प्रकार के भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं रहती।

बेकार की काँव–काँव न कर मधुर वाणी बोलने और वातावरण में मिश्री घोलने से सम्बन्धित कबीरदास जी का दोहा है –

dkxk dkdk èku gj] dk;y dkdk n;A
ehB cpu l|uk; d] tx viuk dj y;AA

अर्थात् कौआ किसी का धन चोरी नहीं करता और कोयल भी किसी को कुछ देती नहीं है। कौआ किसी का कुछ नहीं बिगाड़ता और न ही कोयल किसी का भला करती है। इनमें फर्क सिर्फ वाणी का है। कोयल मीठे बोल बोलकर माहौल को संगीत के स्वरों से भर वातावरण को शुद्ध कर देती है और सबका मन मोह लेती है, जबकि कौआ अपनी काँव–काँव की कर्कश ध्वनि से शोर मचाता है।

गरुड़ जग के पालनहार विष्णु का, उल्लू धन की देवी लक्ष्मी का, मोर कार्तिकेय स्वामी का, हंस ज्ञान की देवी सरस्वती का वाहन है, तो सर्वसुलभ पक्षी कौआ शनि ग्रह का वाहन माना गया है। शास्त्रों में शनि के नौ वाहन कहे गए हैं– गधा, घोड़ा, हाथी, भैंसा, सिंह, सियार, कौआ, मोर और हंस माना जाता है कि शनि की साढ़ेसाती के

दौरान शनि जिस वाहन पर सवार होकर व्यक्ति की कुण्डली में प्रवेश करते हैं उसी के अनुरूप शनि व्यक्ति को इस अवधि में फल देते हैं। जिस व्यक्ति के लिए शनि का वाहन घोड़ा, सिंह, मोर या हंस होता है उनके लिए शनि की साढ़ेसाती की अवधि बहुत शुभ होती है, लेकिन व्यक्ति के लिए शनि का वाहन कौआ होने पर उसे शान्ति व संयम से काम लेना जरूरी होता है। यह कहा जाता है कि परिवार में किसी मुद्दे को लेकर विवाद व कलह की स्थिति में ज्यादा–से–ज्यादा बातचीत कर बात को बढ़ने से रोकने की कोशिश करने से कष्टों में कमी होती है।

शास्त्रों के अनुसार पितृ पक्ष 30– भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन कृष्णपक्ष अमावस्या तक के सोलह दिन में अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुरूप शास्त्र विधि से श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करने पर सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं और घर, परिवार, व्यवसाय व आजीविका में उन्नति होती है। मान्यता है कि इस पक्ष में कौए को खाना खिलाने का अर्थ है अपने पितरों व पूर्वजों को खाना खिलाना। ऐसा

माना जाता है कि मरने के बाद जब तक कोई दूसरी योनि इंसान को नहीं मिलती है, तब तक वह कौआ बनकर रहता है। कौओं को खाना खिलाने से पितरों को खाना मिलता है, पुरखों को मोक्ष की प्राप्ति होती है और जल्दी ही उनका मानव के रूप में जन्म भी हो जाता है। हिन्दू पुराणों ने कौए को देवपुत्र माना है। यह मान्यता है कि इन्द्र के पुत्र जयंत ने सबसे पहले कौए का रूप धारण किया था। यह कथा त्रेता युग की है, जब राम ने अवतार लिया और जयंत ने कौए का रूप धारण कर सीता को घायल कर दिया था। तब राम ने तिनके से ब्रहमास्त्र चलाकर जयंत की आँख फोड़ दी थी। जब उसने अपने किए की माफी मांगी तब राम ने उसे यह वरदान दिया कि तुम्हें अर्पित किया गया भोजन पितरों को मिलेगा। इसी के चलते प्रत्येक श्राद्ध के दौरान पितरों को खाना खिलाने के तौर पर सबसे पहले कौओं को खाना खिलाया जाता है। यही कारण है कि शातिर, मौकापरस्त व अपशकुनी माने जानेवाले कौओं का श्राद्ध पक्ष में महत्व बढ़ जाता है।

कौए के रंग के बारे में एक किंवदंती प्रचलित है, जो मानव समाज को वचन का पालन करने की सीख व वचन भंग न करने की चेतावनी देती है– एक ऋषि ने कौए को अमृत खोजने भेजा और कहा कि सिर्फ अमृत की जानकारी ही लेना, उसे पीना नहीं। एक वर्ष के परिश्रम के पश्चात सफेद कौए को अमृत की जानकारी मिली। अमृत पीने की लालसा कौआ रोक नहीं पाया और उसने अमृत पी लिया। इस बारे में उसने जब ऋषि को बताया तो ऋषि आवेश में आ गए और उसे श्राप दिया कि– तुमने मेरे वचन को भंग कर अपवित्र चोंच द्वारा पवित्र अमृत को भ्रष्ट किया है, इसलिए प्राणी मात्र में तुम्हें घृणास्पद पक्षी माना जाएगा एवं मानव जाति अशुभ पक्षी की तरह हमेशा तुम्हारी निन्दा करेगी, लेकिन चूँकि तुमने अमृत पान किया है, इसलिए तुम्हारी स्वाभाविक मृत्यु कभी नहीं होगी, कोई बीमारी भी नहीं होगी एवं वृद्धावस्था भी नहीं आएगी। तुम्हारी मृत्यु आकस्मिक रूप से ही होगी। इतना कहकर ऋषि ने अपने कमण्डल के काले पानी में उसे डूबो दिया। सफेद रंग का कौआ, काले रंग का बन कर उड़ गया और तभी से कौए काले हो गए।

कौए पर कई मुहावरे प्रसिद्ध हैं, जैसे – कव्वे उड़ाना (फिजूल घूमना, निठल्लापन), काँव– काँव करना (शोर मचाना), काक चेष्टा (कौए की तरह चौकन्ना रहना), काक दृष्टि होना (एकाग्रता और पक्की नज़र होना), काणा कौआ (मनहूस), कागारोल (कौओं की तरह मचाया जानेवाला हो–हल्ला/बहुत अधिक और बेढंगा शोरगुल या हुल्लड़), कौआ परी (काली, बदशकल स्त्री)। कौए पर बने गीत भी बहुत प्रचलित हुए हैं, जैसे – मोरी अटरिया पे कागा बोले, मोरा जिया डोले, कोई आ रहा है (आँख–1950), झूठ बोले कौआ काटे, काले कौए से डरियो (बॉबी, 1973), भोर होते कागा करे क्यों काँ–काँ, कौन परदेसी आएगा मेरे गांव (चिराग, 1969)।

ईश्वर का न्याय या...

* रजनी सूद

मेरी बडी बहन फरीदाबाद के एक गांव जैसी कॉलोनी में रहती है। उनके पड़ोस में ही एक परिवार रहता था। उनसे दीदी के बडे अच्छे संबंध थे, यदा–कदा मेरी भी उनसे मुलाकात होती थी, क्योंकि महीने के किसी भी "शनिवार या रविवार को सहूलियत अनुसार मैं भी अपनी दीदी के घर जाती थी। उनके पड़ोस के परिवार में कुल चार प्राणी थे, पति–पत्नी और एक बेटा–बेटी पत्नी को छोड़कर सभी प्राइवेट नौकरी करते थे। इसी तरह से जिंदगी के साल घटते जा रहे थे, मैं भी दीदी के घर आती–जाती रही। एक दिन पता चला अंकल की तबियत बहुत ही खराब है, मैंने सोचा चलो उनका हाल–चाल लेकर आया जाए, मैंने पूछा अंकल क्या हुआ? बोले बेटी क्या बताऊँ आजकल बीमार रहने लगा हूँ मैंने कहा परन्तु हुआ क्या? उन्होंने बताया मुझे टी० बी० हो गयी है। मैंने उन्हें दिलासा दी और कहा अंकल अच्छे खान–पान और रेगुलर दवा–दारू लेने से आप एकदम ठीक हो जाओगे। उसके बाद मैं दीदी के घर आ गई। "शनिवार रात स्टे करने के उपरान्त रविवार मै अपने घर आ जाती हूँ ताकि अपना घर भी संभाल सकूं। काफी महीनों से मैं दीदी के घर नहीं जा पाई, क्योंकि मेरी मदर–इन–लॉ अब मेरे पास आकर रहने लगी थी और दीदी के पास जाने का अब वक्त ही कहॉ था? खैर छः–सात महीनों के बाद मैं दीदी के घर गई तो पता चला कि उनके पड़ोस में रहने वाली लड़की की "शादी हो गई है। मैंने कहा चलो अच्छा हुआ, तभी अंकल आंटी वहॉ आ गए, मैंने कहा अंकल बेटी की "शादी की मुबारक।" अंकल ने धीमे से कहा बेटा "शादी कर तो दी पर वो अपने घर में खुश नहीं है। मैंने कहा अंकल क्या हुआ, बोले बेटा उसका आदमी "शराब पीकर अपनी बीवी को बहुत मारता है अब तो उसने खर्चा–पानी देना भी बंद कर दिया है। मैंने कहा ये तो बहुत बुरी बात है अंकल। आप जाकर अपने दामाद को समझाते क्यूँ नहीं, उन्होंने कहा बेटा गए थे परन्तु "शराबी को कहाँ समझ आता है। मैने कहा ये तो बड़ी दुःख की बात है। एज यूजुअल "शनिवार को स्टे करने के उपरान्त मैं रविवार को अपने घर आ गई। परन्तु मेरे दिमाग में उन अंकल की ही बात घूमती रही। खैर, पता चला कि अब उनकी बेटी उनके घर आकर ही रहने लगी थी क्योंकि उसके पति ने उसे मार–पीट कर उसे घर से बाहर निकाल दिया था। बेचारी बेटी कहॉ जाती मायके के अलावा उसका सहारा ही कौन था? खैर मेरी बेटियॉ भी अब बड़ी हो गई हैं। मैं भी यदा–कदा ही अपने घर से कहीं जा पाती हूँ, काफी समय के बाद मेरी और दीदी की मुलाकात हुई। मैंने उनसे पड़ोस में रहने वाली फैमिली का हाल–चाल पूछा। उसने बताया कि आजकल उनके घर में काफी क्लेश चल रहा है। मैंने कहा क्यूँ? बोली भाई कहता है मैं कमाता हूँ और सब खाते हैं। मैंने कहा लड़की को बोलो वो भी अब नौकरी करना शुरू कर दे पहले भी तो वह नौकरी करती ही थी। मेरी दीदी ने कहा छोड़ो तुम्हें क्या? तुम सबके दुःख में क्यूँ दुःखी हो जाती हो, मैंने कहा क्या करूँ दीदी, मेरी फितरत ही ऐसी है। खैर फिर बहुत टाईम के बाद मैं दीदी के घर गई पता चला भाई ने अपनी बहन को घर से निकाल दिया था। मैंने कहा बड़ा बदतमीज़ भाई है वो। मेरी दीदी बोली, आजकल के रिश्ते नाते ऐसे ही होते हैं। मेरा फरीदाबाद जाना बेहद कम हो गया है पर चूंकि मेरी बहन के पोते का जन्मदिन था इसलिए मुझे जाना पड़ा। मैंने देखा अंकल–आंटी को दीदी ने नहीं बुलाया था मैंने पूछा दीदी अंकल–आंटी को नहीं बुलाया, बोली, बाद में बताऊँगी, खैर जब बर्थडे पार्टी खत्म हो गई तो दीदी ने बताया अंकल–आंटी के बेटे की एक्सीडेंट में मोत हो गई है, मैंने कहा ओह–! मेरी बहन बोली उसे अपनी बहन की बद्दुआ लगी हैं। मैंने पूछा कैसे? बोली इसी लड़के ने अपनी बहन को बारिश में धक्के मारकर घर से बाहर निकाला था। मैंने कहा ओह––गॉड! फिर मेरी बहन बोली, अंकल–आंटी ने अपने बेटे को बहुत रोका था कि बेटा ऐसा मत कर वो कहाँ जाएगी। परन्तु बेटा नहीं माना। मैंने कहा, हुआ तो बहुत ही बुरा। बोली हाँ! इनका तो परिवार ही उजड़ गया, मैंने पूछा वो लडकी कहाँ है। बोली कुछ नहीं पता। इसे ईश्वर के न्याय कहूँ या उस भाई की करनी का फल आप ही डिसाइड किजिए? वो भाई जो रक्षा बंधन पर अपनी बहन की रक्षा करने का वचन देता है, वो पति तो सात फेरों में अपनी पत्नी को तन मन–धन से साथ देने का वचन देता है, क्या औचित्य रह गया उन सातों वचनों का? मेरी तरह आप भी सोचिए।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सामाजिक संरक्षण और कृषि

* रेखा दुबे

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है और यहां की दो तिहाई जनसंख्या की जीविका का साधन कृषि है। लेकिन आज स्थिति विपरीत होती जा रही है, किसान कृषि क्षेत्र को अनदेखा मानकर अन्य क्षेत्र में अपने जीविकापार्जन के साधन को ढूंढने के लिए तैयार हो रहे हैं। आज के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो विश्व की आधी से अधिक आबादी सामाजिक संरक्षण के विशेषाधिकार से वंचित है, ये स्थिति चिंताजनक तो है।

सामाजिक संरक्षण का प्रचार–प्रसार एक सुरक्षा यंत्र की तरह है जिसे उत्पादन गतिविधियों से जुड़े लोगों के साथ–साथ उन लोगों को भी प्रदान किया जा सकता है जो अपनी बीमारी, वृद्धावस्था के कारण रोजगार से जुड़े रहने में अब असमर्थ हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि कृषि जैसे कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों को सामाजिक संरक्षण दिया जाए ताकि जीविकोपार्जन के साधन सुलभ हो सकें और अनाज का उत्पादन क्षेत्र निरूत्साहित न हो।

lkekftd lqj{k.k dk ykHk %

1. ये प्रत्यक्ष रूप से आय का साधन जुटाता है जिससे खाद्य सुरक्षा एवं गरीबी दूर होगी।
2. किसानों और ग्रामीणों के वित्तीय संकट की स्थिति से उबरने में सहायक है जिससे कृषि के क्षेत्र में निवेश का मार्ग प्रशस्त होता है और खाद्य उत्पादन प्रभावित होता है।
3. हमारी अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है जिसका सकारात्मक प्रभाव कृषि उत्पाद, ग्रामीण रोजगार और गरीबी निवारण है।
4. ये सुस्थिर खाद्य प्रणाली, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन एवं जीविकापार्जन का प्रसार करता है।
5. पूंजी के विकास को बढ़ावा।

सामाजिक संरक्षण के अभाव में असुरक्षित ग्रामीण अपनी संपति बेच कर शहरों की ओर जाने लगे हैं। फसल की कम पैदावार भी उनके पलायन का कारण बन रही है। कृषि क्षेत्र एक विशेष वर्ग से वंचित हो रहा है जो इस क्षेत्र के विशेषज्ञ हैं अर्थात् हमारे किसान भाई और इससे युवा वर्ग की कृषि को जीविकोपार्जन का साधन बनाने की भावी संभावनाएं भी प्रभावित हो रही हैं।

आज सरकार के लिए ये सबसे बड़ी चुनौती है कि सुविधाओं से वंचित एवं असुरक्षित लोगों को सामाजिक संरक्षण दिया जाए; विशेषकर ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों के पिछड़े हुए इलाकों में। सामाजिक संरक्षण कोई रामबाण नहीं है। आवश्यक है कि विकास की नीतियों, संरक्षण के उपायों और इससे होने वाले विकास का भली–भांति निर्धारण हो। गरीब बच्चों एवं महिलाओं को संतुलित एवं कुपोषण रहित भोजन प्राप्त हो। किसानों और ग्रामीण परिवारों को वितीय बाधाओं से बाहर लाया जाए और उनमें खाद्य उत्पादन के जोखिमों के प्रबंधन के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण जागृत किया जाए। फार्म स्तर पर कृषि में निवेश को बढ़ावा दिया जाए ताकि किसानों की इस क्षेत्र में बने रहने की संभावनाएं बढ़ें। सुस्थिर खाद्य प्रणाली और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, भूमि संरक्षण, जल संरक्षण प्रबंधन और जल संचयन संरचना के कार्यक्रमों को ग्रामीण एवं गरीब परिवारों से जोड़ना होगा। ये कार्य सहज नहीं है लेकिन आवश्यक है कि किसानों को कृषि क्षेत्र में रोजगार के ऐसे अवसर मिले कि खाद्य सुरक्षा सबका अधिकार बने और सभी के घर तक अन्न पहुंचे और ये तभी संभव हो पाएगा जब कृषि क्षेत्र अन्य क्षेत्रों से पिछड़ा नहीं रहेगा। हमारी भावी योजनाएं इतनी कारगर सिद्ध हो जाएं कि इस क्षेत्र में रोजगार के ऐसे अवसर सुलभ करा पाएं कि

ge xo l dg ldfd gekj n'k e tu&tu rd igpxk vUu vkj n'k dk fdlku gkxk lEiUuA

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

सर्वप्रिय राजभाषा हिन्दी

* सुभाष चन्द्र

भाषा यद्यपि अपने भावों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, परंतु हम केवल भाषा द्वारा ही अपने पूर्ण मनोभावों, विचारों और तमन्नाओं को सही ढंग से अभिव्यक्त कर पाएं, ऐसा होना असम्भव है। मनुष्य को अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए केवल शब्दों की जरूरत नहीं है। व्यक्ति अपने सुख–दुख की बातों को अपनी आंखों, होठों, चिन्हों तथा चित्रों द्वारा भी बहुत बेहतर ढंग से व्यक्त कर सकता है। परन्तु अभिव्यक्ति के सभी साधनों में भाषा ही सर्वाधिक सजीव, सुचारू और सशक्त माध्यम है।

बच्चा जब पैदा होता है तो सबसे पहले अपनी माता से प्रेम की भाषा सीखता है। बच्चे द्वारा मां से सीखी गई भाषा ही उम्र भर उसके खून में रच जाती है। बच्चा बड़ा होकर स्कूल और कॉलेजों में अन्य कई भाषाएं और विषयों का ज्ञान प्राप्त करता है।

कोई भी भाषा अच्छी या बुरी नहीं है, शब्द परिचित या अपरिचित होते हैं। भाषा तो केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है। जिस भाषा में अपनी बात को उचित ढंग से बिना रोक–टोक उन्मुक्त मन से पेश कर सकें, वही सबसे भली भाषा है। वह केवल अपनी मातृभाषा ही हो सकती है।

भाषा मानव के भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। हमारे देश के राजकाज के कार्य हेतु एक ऐसी भाषा की जरूरत महसूस की गई, जो सर्वप्रिय हो, जो देश की भावात्मक एकता को कायम रखने में सक्षम हो। हमारे संविधान निर्माताओं ने बहुत सोच–विचार करके हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में चुना। आज़ादी के बाद से लेकर हिंदी ने अपने गुणों के कारण बहुत विकास किया। हिंदी केवल उत्तर को दक्षिण से मिलाती ही नहीं, बल्कि मानव का मानव से परिचित कराती है। हिंदी वास्तव में भारत की भावनात्मक एकता का पर्यावाची बन चुकी है। हिंदी के विकास के लिए शासकीय सहायता की इतनी जरूरत नहीं, जितना कि लोगों द्वारा इसे दिल से स्वीकार करना है। इस पर गर्व महसूस करने से हिंदी बढ़ेगी।

हिंदी एक ऐसी नदी के समान है, जिसकी कोई सीमा या क्षेत्र नहीं। वह जिस राज्य से बहती है, उसी को अपनाती है। जिस प्रकार नदी के पानी का कोई क्षेत्रीय विभाजन नहीं होता, उसी प्रकार हिंदी को क्षेत्रीय भाषा मानना उपयुक्त नहीं होगा। क्षेत्र विशेष के लोग चाहे जिस भी रूप में उसे बोल लें, उन विभिन्नताओं का हिंदी भाषा पर कोई असर नहीं पड़ता। हिंदी भाषा एक ऐसे गुलदस्ते जैसी है, जिसने कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के फूलों को समाया हुआ है। इस गुलदस्ते में सभी क्षेत्रीय भाषाओं के शब्द मौजूद हैं, जैसे तमिल, तेलगू, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, कन्नड़, उर्दू, मलयालम, आदि। यहां तक कि हिंदी ने अंग्रेजी के कुछ शब्दों को भी प्रयोग के आधार पर खुले मन से अपनाया है। यदि सब प्रान्त या भाषा के शब्दों को हिंदी से अलग कर दें तो हिंदी भाषा का अस्तित्व नहीं रहेगा। अतः हमें हिंदी की लोकप्रियता को देखते हुए हिंदी को अपनाना चाहिए। हिंदी तो भारत के संविधान द्वारा भारतीय नागरिकों को प्रदान की गई सार्वजनिक संपत्ति है। इसका उपयोग करना हरेक भारतीय का हक है, चाहे वह भारत में तो या विदेश में हो। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। आधुनिक युग में हिंदी का प्रयोग इन्टरनेट के माध्यम से ज्ञान की सभी विधाओं के लिए बखूबी हो रहा है।

आइए, हम सब मिलकर हिंदी को सबकी भाषा बनाएं।

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, चड़ीगढ़

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल का राजभाषा निरीक्षण

मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक की झलकियां

केन्द्रीय भंडारण निगम ने कारपोरेशन बैंक के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

केन्द्रीय भंडारण निगम ने कारपोरेशन बैंक के साथ निगमित कार्यालय, नई दिल्ली में दिनांक 03 मार्च, 2016 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौता ज्ञापन का उद्देश्य किसानों को उनके उत्पाद के वैज्ञानिक भंडारण हेतु निगम के वेअरहाउसों में जमा करने पर निगम द्वारा जारी नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद को गिरवी रखकर आसानी से वित्त की सुविधाएं प्रदान कराना है। श्री हरप्रीत सिंह, प्रबंध निदेशक, केन्द्रीय भंडारण निगम एवं श्री जय कुमार गर्ग, सी.ई.ओ. एवं प्रबंध निदेशक, कारपोरेशन बैंक तथा दोनों संगठनों के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।

निगम के प्रबंध निदेशक ने इस अवसर पर कहा कि निगम ने अपने 180 वेअरहाउस वेअरहाउसिंग विकास विनियामक प्राधिकरण के साथ पंजीकृत कराए हैं जो नेगोशिएबल वेअरहाउस रसीद जारी करने हेतु प्राधिकृत हैं। ये वेअरहाउस कृषि उत्पाद को वैज्ञानिक भंडारण सुविधाएं प्रदान करने हेतु पूर्ण रूप से सुसज्जित हैं जिन्हें किसानों एवं व्यापारियों को प्रदान किया जाता है।

श्री एस.सी. मुदगेरिकर, निदेशक (एम.सी.पी.) ने कहा कि वर्ष 2015–16 के दौरान इन वेअरहाउसों ने जनवरी, 2016 तक 10,090 नेगोशिएबल वेअरहाउसिंग रसीदें जारी की हैं जिनके विरुद्ध जमाकर्ताओं ने 149 करोड़ रुपए के ऋण का उपयोग किया।

श्री जयकुमार गर्ग, सी.ई.ओ. एवं प्रबंध निदेशक, कारपोरेशन बैंक ने विचार व्यक्त किए कि बाजार में निगम के नेगोशिएबल वेअरहाउसिंग रसीद की विश्वसनीयता को देखते हुए उनका बैंक किसानों को जारी नेगोशिएबल वेअरहाउसिंग रसीदों को गिरवी रखकर उन्हें ऋण प्रदान करने के प्रति आश्वस्त है।

केन्द्रीय भंडारण निगम द्वारा निगमित सामाजिक दायित्व के अंतर्गत चिकित्सा एवं नेत्र जाँच कैंपों का आयोजन

केन्द्रीय भंडारण निगम ने महावीर इंटरनेशनल, दिल्ली (एक स्वैच्छिक धर्मार्थ, गैर–धार्मिक समाज सेवा संगठन) के सहयोग से दिल्ली, लोनी, गाजियाबाद एवं गुड़गांव में चार चिकित्सा स्वास्थ्य एवं नेत्र जाँच के कैंप आयोजित किए। श्री जे. एस. कौशल, निदेशक (कार्मिक) ने केन्द्रीय भंडारण निगम के अन्य अधिकारियों के साथ 31.3.2016 को नेत्र जाँच कैंप का निरीक्षण किया और मरीजों को दवाईयां वितरित कीं।

केंद्रीय भंडारण निगम में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

केंद्रीय भंडारण निगम, निगमित कार्यालय, दिल्ली में दिनांक 08.03.2016 को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ''महिला सशक्तिकरण'' विषय पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा प्रतिष्ठित संस्थान के श्रेष्ठ वक्ताओं को आमंत्रित किया गया। केंद्रीय भंडारण निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस.कौशल ने इस अवसर पर अपने विचार रखे। इण्डियन ऑयल कॉरपोरेशन की कार्यकारी निदेशक (प्राइसिंग), सुश्री अमिता सिंह इस आयोजन के अवसर पर विशिष्ट अतिथि थीं।

नेशनल मीट ऑफ वुमन इन पब्लिक सेक्टर

चेन्नई में आयोजित 26वीं नेशनल मीट ऑफ वुमन इन पब्लिक सेक्टर में शामिल निगमित कार्यालय एवं क्षेत्रीय कार्यालय की महिला प्रतिभागीगण।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा निगम को आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन पुरस्कार

यह प्रसन्नता की बात है कि निगम प्रत्येक वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में विभिन्न सदस्य उपक्रमों के लिए प्रतियोगिता आयोजित करता है। इस क्रम में निगम द्वारा 'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का सफल आयोजन करने पर दिनांक 25.02.2016 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली की 42वीं बैठक में निगम को सम्मानित किया गया। निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस. कौशल ने सचिव (राजभाषा) श्री गिरीश शंकर से नई दिल्ली में आयोजित समारोह में सम्मान स्वरूप अवार्ड प्राप्त किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के सफल प्रतिभागियों में से निगम के दो अधिकारियों सुश्री रुचि यादव, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (सामान्य) एवं श्रीमती यास्मीन सैय्यद, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (लेखा) को भी इस अवसर पर पुरस्कार स्वरूप शील्ड तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित स्थापना दिवस समारोह की झलकियाँ

निगमित कार्यालय में ध्वजारोहण एवं खेल पुरस्कारों का वितरण

निगमित कार्यालय द्वारा प्रत्येक वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर निगमित कार्यालय के प्रागंण में प्रबंध निदेशक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया।

गणतंत्र दिवस के इस महत्वपूर्ण दिवस पर आयोजित खेल के पुरस्कार निगम के स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री जी की उपस्थिति में प्रदान किए गए।

कोल इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
(एक महारत्न कम्पनी)
5वां तल, कोर 1 एवं 2, स्कोप मीनार
लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक्ट सेन्टर,
लक्ष्मी नगर, दिल्ली - 110092
फोन : 91-11-22017481/485/454
फैक्स : 91-11-22010468 / 22454798
ई-मेल : coalindiadelhi@gmail.com

COAL INDIA LIMITED
(A Government of India Undertaking)
(A Maharatna Company)
5th Floor, Core 1 & 2, Floor, Scope Minar,
Laxmi Nagar District Centre,
Laxmi Nagar, Delhi-110092
Phone : 91-11-22017481 / 485 / 486 / 502
Fax : 91-11-22010468 / 22454798
E-mail : coalindiadelhi@gmail.com

सन्दर्भ संख्या:सीआईएल:राभा:हिन्दी:2016 दिनांक : 13.05.2016

सुश्री ममता बजाज
प्रबंधक(राजभाषा)
केन्द्रीय भण्डारण निगम्
4/1, सीरी इंस्टीट्यूशनल एरिया
अगस्त क्रांति मार्ग
हौजखास, नई दिल्ली-110016

महोदय,

पत्र संख्या केभनि/भण्डारण भारती/2016 दिनांक 26.04.2016, आपके द्वारा भेजा त्रैमासिक गृह पत्रिका 'भण्डारण भारती' का 59वां अंक प्राप्त हुआ है एवं इस पत्रिका काफी ज्ञानवर्धक है।

अत: अनुरोध है कि भविष्य में भी इस पत्रिका को इस कार्यालय में प्रेषित किया जाए।

धन्यवाद।

भवदीय
(इंदु मिश्रा)
प्रबंधक(रा.)/हिंदी प्रभारी

REGD. OFFICE : COAL BHAWAN, PREMISES-AF-III, ACTION AREA-1A, NEW TOWN, RAJARHAT, KOLKATA-700156
Web : www.coalindia.in, www.coalindia.co.in

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय-1
National Insurance Company limited, Delhi Regional Office-1

सेवा में,

दि.क्षे.का-1/रा.भा./2016
दिनांक: 11.05.2016

श्रीमती ममता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा),
केन्द्रीय भण्डारण निगम,
4/1, सीरी इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
हौज खास, अगस्त क्रांति मार्ग,
नई दिल्ली-110016

विषय: 'भण्डारण भारती' पत्रिका के त्रैमासिक अंक-59 की पावती

महोदया,

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित 'भण्डारण भारती' पत्रिका का त्रैमासिक अंक-59 प्राप्त हुआ। धन्यवाद।

पत्रिका में संकलित सभी लेख व कविताएं पठनीय हैं। विशेषकर 'बुद्धि ही सफलता की कुंजी है', 'विपरीत परिस्थितियों में भी...', व 'जरिया बनो एक मुस्कुराहट का' लेख अच्छे लगे। 'मैं इजाजत ही करूंगा' व 'जिंदगी धूप-छाँव' कविता मुझे बहुत ही अच्छी लगी। पत्रिका में दी गई झलकियों के माध्यम से आपके कार्यालय की गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी मिलती है। कुल मिलाकर पत्रिका का संपादन काफी अच्छा किया गया है। मेरी ओर से सभी संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन की बधाई।

हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी उक्त पत्रिका का अंक हमें नियमित रूप से प्राप्त होता रहेगा। कृपया नोट करें कि हमारे कार्यालय में वर्तमान राजभाषा अधिकारी श्री डी.पी. गौतम हैं। अत: भविष्य में यह पत्रिका उन अधिकारी के नाम से ही भेजें।

धन्यवाद,

भवदीय,

(वन्दना)
क्षेत्रीय प्रबंधक

क्षेत्रीय कार्यालय: जीवन भारती भवन, टावर-2, लेवल-4, 124, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
RO: Jeevan Bharti Building, Tower-II, Level-IV, 124, Connaught Circus, New Delhi-110001
CIN No. U10200WB1906GOI001713 | Phone No. 011-23311066, 23311101 Fax: 011-23325499
E mail : 350000@NIC.co.in
नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड पंजीकृत एवं प्रधान कार्यालय: 3 मिडिलटन स्ट्रीट, कोलकाता 700 071
National Insurance Company Limited Registered & Head Office: 3 Middleton Street, Kolkata 700 071
Visit us at: www.nationalinsuranceindia.com

मेकॉन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान)
MECON LIMITED (A GOVERNMENT OF INDIA ENTERPRISE)

13वां एवं 15वां तल, नार्थ टॉवर, स्कोप मीनार, लक्ष्मी नगर व्यावसायिक केन्द्र, दिल्ली-110092
13th & 15th Floor, North Tower, Scope Minar, Laxmi Nagar District Center, Delhi-110092
फोन/Phone : +91-11-2244 7417, फैक्स/Fax : +91-11-2204 1214
ई-मेल/E-mail : mecondly@bol.net.in, वेबसाइट/Website : http://www.meconlimited.co.in

सं.9150/रा.भा./2016 दिनांक 24.05.2016

सेवा में,
श्रीमती ममता बजाज,
प्रबंधक (राजभाषा),
केन्द्रीय भण्डारण निगम (भारत सरकार का उपक्रम),
4/1, सीरी इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौजखास,
नई दिल्ली – 110 016

विषय: **आपके संस्थान की त्रैमासिक गृह पत्रिका "भण्डारण भारती" के 59वें अंक की प्राप्ति के संदर्भ में।**

महोदया,

आपका पत्र सं. केभनि/भण्डारण भारती/2016 दिनांक 26.04.2016 के साथ आपके संस्थान की त्रैमासिक गृह पत्रिका "भण्डारण भारती" का 59वां अंक सधन्यवाद प्राप्त हुआ।

पत्रिका में प्रकाशित हिन्दी संबंधी सभी लेख ज्ञानवर्धक, प्रेरणास्पद व रोचक हैं।

पत्रिका में समाहित सभी सामग्री ज्ञानवर्धक, सूचनाप्रद और सार्थक है तथा संपूर्ण कलेवर और साजसज्जा अद्वितीय बनी की है। संस्थान में चल रही विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलकियों को अत्यंत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

आशा करती हूं कि भविष्य में भी पत्रिका का प्रकाशन इसी प्रकार होता रहेगा। संपादन मंडल के सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

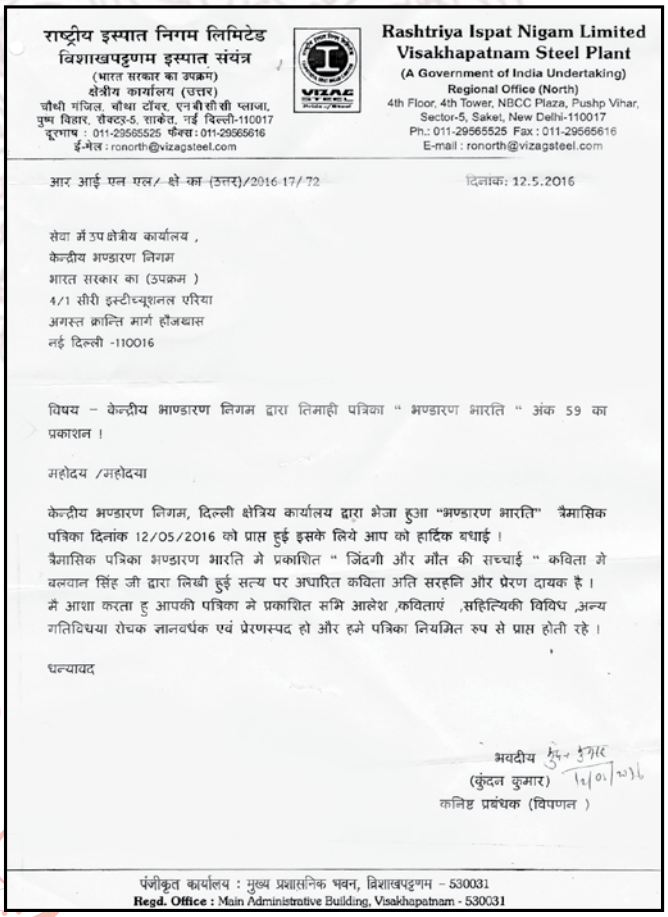

धन्यवाद!

भवदीय
कृते मेकॉन लिमिटेड
(जमुना सबरवाल)
राजभाषा अधिकारी

पृष्ठ 1 का 1

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड
विशाखपट्टणम इस्पात संयंत्र
(भारत सरकार का उपक्रम)
क्षेत्रीय कार्यालय (उत्तर)
चौथी मंजिल, चौथा टॉवर, एनबीसीसी प्लाजा,
पुष्प विहार, सैक्टर-5, साकेत, नई दिल्ली-110017
दूरभाष : 011-29565525 फैक्स : 011-29565616
ई-मेल : ronorth@vizagsteel.com

Rashtriya Ispat Nigam Limited
Visakhapatnam Steel Plant
(A Government of India Undertaking)
Regional Office (North)
4th Floor, 4th Tower, NBCC Plaza, Pushp Vihar,
Sector-5, Saket, New Delhi-110017
Ph.: 011-29565525 Fax : 011-29565616
E-mail : ronorth@vizagsteel.com

आर आई एन एल/ क्षे का (उत्तर)/2016-17/ 72 दिनांक: 12.5.2016

सेवा में उप क्षेत्रीय कार्यालय ,
केन्द्रीय भण्डारण निगम
भारत सरकार का (उपक्रम)
4/1 सीरी इस्टीच्यूशनल एरिया
अगस्त क्रान्ति मार्ग हौजखास
नई दिल्ली -110016

विषय – केन्द्रीय भाण्डारण निगम द्वारा तिमाही पत्रिका " भण्डारण भारति " अंक 59 का प्रकाशन !

महोदय /महोदया

केन्द्रीय भण्डारण निगम, दिल्ली क्षेत्रिय कार्यालय द्वारा भेजा हुआ "भण्डारण भारति" त्रैमासिक पत्रिका दिलांक 12/05/2016 को प्राप्त हुई इसके लिये आप को हार्दिक बधाई ।
त्रैमासिक पत्रिका भण्डारण भारति मे प्रकाशित " जिंदगी और मौत की सच्चाई " कविता जो बलवान सिंह जी द्वारा लिखी हुई सत्य पर अधारित कविता अति सरहनि और प्रेरण दायक है ।
मै आशा करता हु आपकी पत्रिका मे प्रकाशित सभि आलेश ,कविताएं ,सहित्यिकी विविध ,अन्य गतिविधया रोचक ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणस्पद हो और हमे पत्रिका नियमित रुप से प्राप्त होती रहे ।

धन्यावद

भवदीय
(कुंदन कुमार)
कनिष्ठ प्रबंधक (विपणन)

पंजीकृत कार्यालय : मुख्य प्रशासनिक भवन, विशाखपट्टणम - 530031
Regd. Office : Main Administrative Building, Visakhapatnam - 530031

पैस्ट नियंत्रण परिचालनों के पश्चात ग्राहकों द्वारा रखी जाने वाली सावधानियां

ऐसा करें

- सभी खाद्य पदार्थों को एयर टाइट कंटेनरों में रखें अथवा पूरी तरह कवर कर रखें।
- जिस क्षेत्र को कीटनाशक द्वारा उपचारित किया गया है, उससे बच्चों, वृद्धों, रोगियों एवं पालतू जानवरों को दूर रखें।
- कृपया पैस्ट कन्ट्रोल आपरेशन के पश्चात परिसरों को कम से कम 2 घंटे के लिए बंद रखें।
- कृपया पैस्ट कंट्रोल ऑपरेटर से परिसर का पूरा क्षेत्र अर्थात स्टोर स्नानघर/शौचालय/शयन कक्षों आदि में छिड़काव/उपचार करवाएं।
- परिचालनों के दौरान फर्श पर बिखरे रसायन के घोल को हटाने के लिए फर्श को अच्छी प्रकार पोंछें धोएं ताकि पालतू जानवरों, बच्चों आदि विषैले तत्वों से बचाया जा सके।
- परिसरों में प्रवेश करने से पहले सभी दरवाजे, खिडकियां तथा रोशनदान खोल दें और लगभग एक घंटे तक पंखे चला दें।
- परिचालनों के लिए प्रयोग किए गए कीटनाशकों का नाम एवं गुणवत्ता के बारे में पैस्ट कन्ट्रोल ऑपरेटर से अवश्य पूछें ।

ऐसा न करें

- कीटनाशक द्वारा उपचारित क्षेत्र में विषैले प्रभाव से बचने के लिए पालतू जानवरों एवं बच्चों को न जाने दें।
- रसोई के सामान को डिटर्जेंट एवं पानी से पूरी तरह धोए बिना प्रयोग न करें।
- यदि कीटनाशक उपचार के समय कोई खाद्य पदार्थ अथवा अन्य खाने योग्य वस्तु बिना ढके रह गयी है तो उसका प्रयोग न करें।
- विषैले प्रभाव से बचने के लिए उपचारित कक्षों के दरवाजों, खिड़कियों अथवा दीवारों को न छुएं।
- कीटनाशक उपचार के दौरान सामने खुले पड़े रह गए कपड़ों को न पहनें।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016